RNI No. UPHIN/2000/3766 ISSN No. 2581-3528 ₹ : 20

केशव संवाद

(अक्टूबर 2023)

सनातन की सांस्कृतिक छाया में जी-20 सम्मेलन

प्रेरणा चित्रभारती फिल्मोत्सव

उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड के
कला एवं मीडिया
विद्यार्थियों के लिए

विषय :

- आजादी का अमृत महोत्सव
- भारतीय लोकतंत्र
- जनजातीय समाज
- उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड की संस्कृति
- पर्यावरण
- ग्राम विकास
- स्वाधीनता आन्दोलन
- भविष्य का भारत
- सामाजिक सद्भाव
- धर्म एवं अध्यात्म
- महिला सशक्तीकरण

वर्ग : वृत्तचित्र - कथा फ़िल्में - डॉक्यु ड्रामा
अधिकतम समय : 20 मिनट

15,16 एवं 17 दिसम्बर 2023
स्थान : गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा

नगद पुरस्कार मूल्य
₹ 200000/-

SCAN TO REGISTER

रजिस्ट्रेशन लिंक - https://prernasamvad.in/registerforfilms | Prerna Media | Prernasmedia | @PrernaMedia

नोट - प्रविष्टियों को 05 जून से 30 अक्टूबर 2023 तक भेज सकते हैं।

www.prernasamvad.in 9891360088
email : prernachitrabharti2023@gmail.com

संपर्क सूत्र : अरुण अरोड़ा - +9811338858 | डॉ. यशार्थ मंजुल - +91 9621560373 | डॉ. राजीव रंजन - +91 9871650421 | कार्यालय - +91 9354133754

केशव संवाद

RNI No. UPHIN/2000/3766

ISSN No. 2581-3528

अक्टूबर, 2023
वर्ष : 23 अंक : 10

संपादक
कृपाशंकर

सह संपादक
डॉ. प्रदीप कुमार

कार्यकारी संपादक
डॉ. नीलम कुमारी

समन्वयक संपादक
पल्लवी सिंह

पृष्ठ संयोजन
वीरेंद्र पोखरियाल

संपादकीय कार्यालय
प्रेरणा शोध संस्थान न्यास
सी-56/20 सेक्टर-62, नोएडा -201301
फोन न. 0120 4565851, 2400335
ईमेल : keshavsamvad@gmail.com
वेबसाइट : www.prernasamvad.in

स्वामी पंकज कुमार की ओर से मुद्रक/प्रकाशक रमन चावला द्वारा चन्द्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क प्रा.लि. नोएडा से मुद्रित तथा केशव भवन 105 आर्यनगर सूरजकुंड रोड मेरठ से प्रकाशित

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निपटारा मेरठ की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों/फोरम में मान्य होगा। संपादक

विषय सूची

वैश्विक मंच पर भारत ने दिखाई वसुधैव कुटुम्बकम्... - मोहित कुमार.....05

सनातन की सांस्कृतिक छाया में जी-20 सम्मेलन - प्रमोद भार्गव.....06

शताब्दी वर्ष की ओर बढ़ता संघ - डॉ. नीलम कुमारी 08

शक्ति जागरण का पर्व : विजयादशमी - डॉ. पायल अग्रवाल...10

वर्तमान भारतीय सिविल सेवाओं हेतु सरदार... - श्रीमती सोनम.....12

नारी सशक्तिकरण को समर्पित नारी शक्तिवंदन... - श्रेयांशी.....14

गुरु गोविंद सिंह शहीदी दिवस -डॉ. शिवा शर्मा.....16

भारत का सांस्कृतिक वैभव एक नया आकार ले रहा है - प्रहलाद सबनानी.....18

सनातन धर्म मानवता और विज्ञान की नींव - पंकज जगन्नाथ.....20

हर खेल के दाता हम - ललित शंकर..... 23

सपनों के बोझ तले दब रही युवा पीढ़ी - सोनम लववंशी.....24

आपातकाल के विरुद्ध शंखनाद करने वाले लोकनायक ...- मृत्युंजय दीक्षित.....26

जन्मदिवस विशेष.....27

पाठकगण पत्रिका के बारे में अपने सुझाव एवं प्रतिक्रिया, 'संपादक के नाम पत्र' शीर्षक से ई-मेल (keshavsamvad@gmail.com) के माध्यम से भेज सकते हैं। चुने हुए पत्रों को पत्रिका के अगले अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

ISSN No. 2581-3528

संपादकीय.....

केशव संवाद पत्रिका का अक्टूबर अंक आपके हाथों में सौंपते हुए हर्ष का अनुभव हो रहा है। एक और जहां भारत आजादी के अमृत काल का रसास्वादन कर रहा है, वहीं दूसरी और विश्व का सबसे बड़ा स्वयंसेवी संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपने 98 वर्ष की स्वर्णिम व गौरवशाली यात्रा को पूर्ण करते हुए अपने शताब्दी वर्ष की ओर बढ़ रहा है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एक ऐसा सांस्कृतिक संगठन है जिसके लाखों समर्पित स्वयंसेवक राष्ट्र निर्माण में लगे हैं और भारत को परम वैभव संपन्न बनाने के लिए कृत संकल्पित हैं। परम पूज्य सरसंघचालक डॉक्टर केशव बलिराम हेडगेवार जी ने सन 1925 की विजयदशमी को इस उद्देश्य से संघ की स्थापना की कि समर्पित भाव से व्यक्ति निर्माण से समाज निर्माण व राष्ट्र निर्माण के महती कार्य को लक्षित कर के संगठित हिन्दू राष्ट्र की संकल्पना को साकार कर सके।संघ के स्वयंसेवक देश समाज के प्राय सभी क्षेत्र - सेवा, विद्या, चिकित्सा, छात्र, मजदूर और राजनीति में राष्ट्र सर्वोपरि के मूल मंत्र को जीवन का ध्येय मानकर प्राणपण से जुटे हैं। संघ द्वारा भारत की संस्कृति को पुनः स्थापित करने का पावन कार्य संघ के स्वयंसवेकों द्वारा किया जा रहा है। प्रस्तुत अंक भारत की सांस्कृतिक विरासत जैसे वसुधैव कुटुंबकम की भावना, सनातन धर्म, मानवता विज्ञान व जी20 सम्मेलन में सनातन संस्कृति की झलक, भारतीय चिंतन में नारी का स्थान व नारी शक्ति वंदन अधिनियम की प्रासंगिकता, अधर्म पर धर्म की विजय, असत्य पर सत्य की विजय, अंधकार पर प्रकाश की विजय का प्रतीक विजयदशमी पर्व, शक्ति उपासना का पर्व नवरात्र पर्व देश को एकता के सूत्र में बांधने का संदेश देने वाले सरदार वल्लभभाई पटेल जी और हिंदू धर्म के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने वाले गुरु गोविंद सिंह जी के शहीद दिवस को समर्पित है।

आज भारत पुनः अपने विश्व गुरु बनने का मार्ग प्रशस्त करता जा रहा है और भारत ने जी 20 सम्मेलन की अध्यक्षता कर यह प्रमाणित भी कर दिया है कि विश्व का प्रत्येक देश आज हर मामले में भारत की ओर आशा भरी नजरों से देख रहा है। भारत ने जो **One Earth, One Family, One Nation** का संदेश पूरे विश्व को दिया है व वास्तव में सराहनीय है।

अतः

है विश्व गुरु अपना भारत, ये सारे संसार ने माना है
चिर पुरातन संस्कृति का मर्म सभी ने जाना है
युग नमन करेगा, इस धरती को जहाँ ज्ञान का सूरज उगता है।
गर बनकर फिर विश्व गुरु भारत दुनिया के फलक पर चमकता है।

केशव संवाद का यह अंक अवश्य पढ़िए और अपनी प्रतिक्रिया से हमें अवगत कराइये। हमारा यह प्रयास कितना ग्राहा है, यह हमें आपकी प्रतिक्रिया से पता चलेगा। अंत में असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय । असत्य पर सत्य की जीत ही अंतिम परिणाम है ।अतः परिवार के साथ, समाज के साथ दशहरा मनाएंगे दीपावली मनाइए अग्रिम शुभकामनाएं।

संपादक

ISSN No. 2581-3528

वैश्विक मंच पर भारत ने दिखाई वसुधैव कुटुम्बकम की राह

मोहित कुमार

जी 20 के आयोजन को लेकर भारत ने जिस तरह की कुशलता, कूटनीति, अपनी विश्व दृष्टि और नेतृत्व क्षमता का प्रदर्शन किया है, वह संयुक्त राष्ट्र संघ और सुरक्षा परिषद जैसे उन मंचों के लिए भी एक सबक है, जो समय के थपेड़ों के बीच अपनी अवधारणागत त्रुटियों के कारण अपनी प्रासंगिकता खो चुके हैं। भारत ने जी20 का सिर्फ भव्य या विशाल आयोजन नहीं किया है, बल्कि जी20 देशों को भी इस बात का अहसास कराया है कि विश्व मंच सिर्फ नेताओं के बीच संवाद के लिए नहीं होते, बल्कि वे जनता की भागीदारी, उसके संपर्क और संवाद का भी अवसर होते हैं। और यह कि संबंध सिर्फ सैनिक–आर्थिक या राजनीतिक नहीं होते, बल्कि संस्कृति भी उनका एक अनिवार्य अंग होती है।

भारत के अध्यक्षता काल के दौरान सभी मंत्रिस्तरीय बैठकें बिना किसी विज्ञप्ति के पूर्ण हुईं, उससे भारत यह सुनिश्चित करने में बहुतांश सफल रहा है कि निर्णय सर्वसम्मति से हों। यह भारत की कूटनीतिक और नेतृत्व दक्षता का परिचायक है। वास्तव में नए युग में यह स्पष्ट है कि मानव जाति को राष्ट्रीय सीमाओं के आर पार सामंजस्य और सहकार की भावना के साथ आगे बढ़ना होगा, अन्यथा आपूर्ति शृंखला में अवरोध जैसे विषय उत्पन्न होंगे। भारत ने जी20 के संचालन के जरिए यह दिखा दिया है कि विश्व व्यवस्था ऐसी भी हो सकती है, जो न तो किसी गुट की संख्या बल पर निर्भर हो, न सैन्य बल पर।

इतिहास गवाह है कि गरीब देशों को आवश्यकता अनुसार सहायता देने के लिए बनाई गई व्यवस्था भी घूम फिर कर आर्थिक वर्चस्वों के संरक्षण के लिए कार्य करती रही। इसमें भूख, महामारी और युद्ध जैसे मानवहंता विषय तक शामिल रहे। इसी प्रकार यह भी एक ऐतिहासिक तथ्य है कि विश्व में कुछ तनाव बिंदुओं को मात्र इस कारण जीवित रखा गया ताकि साम्राज्यवादी शक्तियों को वहां हस्तक्षेप करने का अवसर मिल सके। भले ही जी20 इन बिन्दुओं को सीधे संबोधित नहीं करता है, लेकिन वह एक नई राह जरूर दिखाता है। यही कारण है कि विश्व विकास, जलवायु परिवर्तन, महामारी और आपदाओं का सामना कर सकने की क्षमता जैसे कई मुद्दों पर परिणाम देने के लिए जी20 की ओर देख रहा है। यह वे विषय हैं जो पूरी मानवता को प्रभावित करते हैं।

निश्चित रूप से विश्व के समक्ष आज ऐसे भी विषय हैं, जो सैनिक संघर्षों से सीधे संबद्ध हैं, लेकिन जिस प्रकार भारत ने उनकी छाया जी20 पर नहीं पड़ने दी, जिस प्रकार भारत के अध्यक्षता काल के दौरान सभी मंत्रिस्तरीय बैठकें बिना किसी विज्ञप्ति के पूर्ण हुईं, उससे भारत यह सुनिश्चित करने में बहुतांश सफल रहा है कि निर्णय सर्वसम्मति से हों। यह भारत की कूटनीतिक और नेतृत्व दक्षता का परिचायक है। वास्तव में नए युग में यह स्पष्ट है कि मानव जाति को राष्ट्रीय सीमाओं के आर पार सामंजस्य और सहकार की भावना के साथ आगे बढ़ना होगा, अन्यथा आपूर्ति शृंखला में अवरोध जैसे विषय उत्पन्न होंगे। भारत ने जी20 के संचालन के जरिए यह दिखा दिया है कि विश्व व्यवस्था ऐसी भी हो सकती है, जो न तो किसी गुट की संख्या बल पर निर्भर हो, न सैन्य बल पर।

विडंबना यह है कि जब भारत विश्व को नेतृत्व देने के ऐतिहासिक मोड़ पर है, तब भी भारत के भीतर की ही कुछ शक्तियों ने इस अवसर को अपनी क्षुद्र राजनीति का मोहरा बनाने का प्रयास किया है। देश की राजधानी के रखरखाव और साज सज्जा को लेकर जैसी राजनीति की गई है, वह हास्यास्पद और घृणित एक साथ है। जिस प्रकार अतीत में गणतंत्र दिवस की परेड के मौके पर विजय चौक के पास धरना देकर एक पर्व को कलंकित करने और विदेशी मेहमानों के सामने भारत को नीचा दिखाने की चेष्टा की जा चुकी है, उसी मानसिकता के कारण दिल्ली के रखरखाव और सजावट को लेकर धन न होने का स्वांग रचा गया। क्या दिल्ली सरकार को फिर मेरठ रेल लाइन के विषय की तरह अदालत में अपमानित होने की प्रतीक्षा थी, जब उसने पैसा न होने का बहाना दिया था और अदालत ने उससे पूछा था उसने अपने विज्ञापन पर कितना खर्च किया है?

जो भी हो, जी20 का आयोजन भारत के इतिहास का वह पल है, जिसने भारत की नेतृत्व क्षमता को विश्व के सामने सफलतापूर्वक प्रस्तुत किया है। भारत इस क्षमता को इतने सशक्त ढंग से प्रस्तुत करने में सक्षम रहे, जिससे विश्व को वास्तव में उससे कुछ सबक मिल सके, हम सभी को यही कामना करनी चाहिए।

ISSN No. 2581-3528

सनातन की सांस्कृतिक छाया में जी-20 सम्मेलन

प्रमोद भार्गव

दिल्ली में जी–20 सम्मेलन इस बार सनातन संस्कृति की छाया में हुआ। इसी भाव को दृष्टिगत रखते हुए शिखर सम्मेलन स्थल पर भगवान शिव की 28 फीट ऊंची 'नटराज' प्रतिमा को प्रतीक रूप में स्थापित किया गया है। इस प्रतिमा में शिव के तीन प्रतीक–रूप परिलक्षित हैं। ये उनकी सृजन यानी कल्याण और संहार अर्थात् विनाश की ब्रह्मांडीय शक्ति का प्रतीक हैं। अष्टधातु की यह प्रतिमा प्रगति मैदान में 'भारत मंडपम' के द्वार पर लगाई गई है। इस प्रतिमा की आत्मा में सार्वभौमिक स्तर पर सर्व–कल्याण का संदेश अंतर्निहित है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इसी शाश्वत दर्शन से भारतीय संस्कृति के दो सनातन शब्द लेकर 'वसुधैव कुटुंबकम्' के विचार को सम्मेलन शुरू होने के पूर्व प्रचारित करते हुए कहा है कि 'पूरी दुनिया एक परिवार है। यह ऐसा सर्वव्यापी और सर्वकालिक दृष्टिकोण है, जो हमें एक सार्वभौमिक परिवार के रूप में प्रगति करने के लिए प्रोत्साहित करता है। एक ऐसा परिवार जिसमें सीमा, भाषा और विचारधारा का कोई बंधन नहीं है। जी–20 की भारत की अध्यक्षता के दौरान यह विचार मानव केंद्रित प्रगति के आवाहन के रूप में प्रकट हुआ है। हम एक धरती के रूप में मानव जीवन को बेहतर बनाने के लिए एक साथ आ रहे हैं। जिससे सब एक–दूसरे के सहयोगी बने रहें और समान एवं उज्जवल भविष्य के लिए एक साथ आगे बढ़ते रहें।' विश्व कल्याण का यह विचार आज तक किसी अन्य देश के राष्ट्र प्रमुख ने नहीं दिया। क्योंकि ये देश असामनता के संदर्भ में ही अपने पूंजीवादी, बाजारवादी और उपभोक्तावादी एजेंडे को आगे बढ़ाते रहे हैं। पश्चिमी देशों द्वारा हथियारों का उत्पादन और फिर उनके खपाने का प्रबंध कई देशों की प्रत्यक्ष लड़ाई और देशों के भीतर ही धर्म और संस्कृति के अंतर्कलहों में हम देखते रहे हैं। अतएव विश्वव्यापी भाईचारे के लिए वसुधैव कुटुंबकम् से उत्तम कोई दूसरा विचार हो ही नहीं सकता।

थोड़ा ठहरकर शिव के 'नटराज' रूप के प्रतीक रहस्यों को समझ लेते हैं। यह प्राचीन कथा स्कंद पुराण में मिलती है। यह शिव के थिलाई–वन में घूमने और इसी वन में ऋषियों के एक समूह के रहने से जुड़ी है। थिलाई वृक्ष की एक प्रजाति है, जिसका चित्रण मंदिर की प्राचीरों पर भी मिलता है। परिवार सहित रहने वाले ये ऋषि मानते थे कि मंत्रों की शक्ति से देवताओं को वश में किया जा सकता है। एक दिन शिव दिगंबर रूप में अलौकिक सौंदर्य और आभा के साथ इस वन से गुजरे। शिव के इस मोहक रूप से ऋषि पत्नियां मोहित हो उठीं और यज्ञ एवं साधना से विचलित होकर शिव के पीछे दौड़ पड़ीं। इस अप्रत्याशित घटनाक्रम से साधुगण क्रोधित हो उठे और उन्होंने मंत्रों का आवाहन कर शिव के पीछे विशैले सर्प छोड़ दिए। शिव ने सर्पों को गहना मानकर एक को गले में, एक को शिखा पर और एक को कमर में धारण कर लिया। शिव का यह उपक्रम वन्य जीवों के संरक्षण द्योतक है।

ऋषि और अधिक क्रोधित हुए। उन्होंने मंत्रसिद्धी से एक बाघ उत्पन्न कर शिव के पीछे दौड़ा दिया। शिव ने बाघ को मारकर उसकी चमड़ी उधेड़ी और कमर में वस्त्र के रूप में पहन ली। यह प्राकृतिक रूप से सभ्यता की ओर बढ़ने वाला पहला कदम था। अंत में ऋषियों ने अपनी सभी तांत्रिक शक्तियों का प्रयोग कर एक शक्तिशाली अपस्मरा नामक राक्षस सृजित किया। यह राक्षस अज्ञानता और अभिमान का प्रतीक है। शिव सरल मुस्कान के साथ इसकी पीठ पर चढ़ जाते हैं और नृत्य करने लगते हैं। शाश्वत आनंद का यह नृत्य कुछ और नहीं अहंकार त्यागकर सहज रूप में जीवन जीने का संदेश है, जो ऋषियों के तप–अनुष्ठान से भिन्न मार्ग है। कलात्मक ढंग से जीने का सत्य–चित्त आनंद अर्थात् सच्चिदानंद के साथ जीना ही श्रेस्यकर है। इन सब को शिव के वशीभूत देखा, तब ऋषि ईश्वर को ही सत्य मानते हुए शिव के समक्ष समर्पण कर देते हैं। गोया इस प्रतीक में विश्व कल्याण का संदेश प्रकट है।

ISSN No. 2581-3528

इन्हीं संदेशों की कड़ी में भारतीय प्रधानमंत्री का मानना है कि कोविड महामारी ने विश्व व्यवस्था को बदल दिया है। नतीजतन तीन महत्वपूर्ण परिवर्तन दिखाई दे रहे हैं, पहला यह अनुभव हो रहा है कि दुनिया के जीडीपी केंद्रित दृष्टिकोण से हटकर मानव केंद्रित दृष्टिकोण को अपनाने की जरूरत है। दूसरा, दुनिया वैश्विक सप्लाई चेन में सुदृढ़ता और विश्वसनीयता के महत्व को पहचान रही है। तीसरा, वैश्विक संस्थानों में सुधार के माध्यम से बहुपक्ष को बढ़ावा देना। ये तीन प्रयोजन सिद्ध हो जाते हैं तो एक बड़ा वैश्विक मानव समुदाय चैन की नींद सोने लायक हो जाएगा। लेकिन इसे विडंबना ही कहा जाएगा कि जी–20 शिखर सम्मेलन के दौरान भी देश गुटों में विभाजित हैं। जबकि भारत विभिन्न पांच मुद्दों पर आम सहमति बनाने में जुटा है। इन मुद्दों में रूस–यूक्रेन युद्ध की समाप्ति, महंगाई पर नियंत्रण और खाद्य–आपूर्ति, ऊर्जा, हथियारों की होड़ और जलवायु परिवर्तन। भारत की कोशिश है कि इन पांच मुद्दों पर सम्मेलन के अंतिम दिन एक संयुक्त बयान जारी हो जाए। लेकिन दुनिया के दो बड़े देशों के राष्ट्राध्यक्ष शामिल नहीं हुए। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की जगह विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव आएं। इसी तरह चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग के स्थान पर प्रधानमंत्री ली कियांग ने चीन का प्रतिनिधित्व किया।

इसलिए ये सवाल उठना स्वाभाविक है कि क्या दुनिया के दो बड़े देशों के प्रमुखों का सम्मेलन में नहीं आने से उन मुद्दों पर संयुक्त बयान जारी हो पाएगा, जिन्हें भारत वैश्विक हितों के लिए हल करना चाहता है। इन राष्ट्रप्रमुखों के नहीं आने के पीछे की मंशा में यह भाव संभव है, कि भारत यदि अपने मकसद में सफल हो जाता है तो भारत वैश्विक शक्ति की ओर बढ़ जाएगा। चीन भारत का पड़ोसी देश जरूर है, लेकिन उसकी हमेशा कोशिश रही है कि भारत में अशांति और अस्थिरता बनी रहे। इसीलिए जी–20 सम्मेलन के ठीक पहले वह अपने मानचित्र में भारत के अरुणाचल प्रदेश के भू–भाग को दिखाकर यह जताने की कुटिल हरकत को अंजाम देता है कि भारत को विश्व शक्ति के रूप में चीन देखना नहीं चाहता। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन इसी परिप्रेक्ष्य में जिनपिंग के सम्मेलन में अनुपस्थित रहने पर अपनी निराशा जाहिर कर चुके हैं। क्योंकि बाइडेन भली–भांति जानते हैं कि जिनपिंग की अनुपस्थिति में जी–20 को वैश्विक, आर्थिक सहयोग का मुख्य मंच बनाए रखने की अमेरिका की कोशिश और विकासशील देशों के लिए वित्तपोषण को सुरक्षित करने के प्रयासों को झटका लगेगा। साफ है, सम्मेलन में जिनपिंग की भागीदारी के बिना व्यावहारिक एवं कल्याणकारी परिणाम तक पहुंचना कठिन है। जिनपिंग भारत में आयोजित इस सम्मेलन में भागीदारी क्यों नहीं कर रहे हैं, इस परिप्रेक्ष्य में चीन ने कोई कारण नहीं बताया है। 2008 में इस संगठन को राष्ट्राध्यक्षों के स्तर पर उन्नत बनाए रखने के बाद यह पहली बार है कि चीनी राष्ट्रपति इस सम्मेलन का हिस्सा नहीं बनें। हालांकि चीनी विदेश मंत्रालय ने सम्मेलन की मेजबानी में भारत का समर्थन किया है और यह भी भरोसा जताया है कि वह सभी पक्षों के साथ मिलकर काम करने को तैयार है। लेकिन चीनी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने पत्रकारों द्वारा यह पूछने पर बताया कि जिनपिंग की जगह ली कियांग को दिल्ली भेजने का फैसला इसलिए लिया गया, क्योंकि दोनों देशों के बीच तनाव के हालात हैं। इस पर प्रवक्ता ने सीमा विवाद का तो कोई हवाला नहीं दिया, लेकिन यह जरूर कहा कि दोनों देशों के बीच संबंध यथास्थिति में हैं। मसलन तनाव में तरलता दिखाने को चीन तैयार नहीं है।

दिल्ली में जी-20 सम्मेलन इस बार सनातन संस्कृति की छाया में हुआ। इसी भाव को दृष्टिगत रखते हुए शिखर सम्मेलन स्थल पर भगवान शिव की 28 फीट ऊंची 'नटराज' प्रतिमा को प्रतीक रूप में स्थापित किया गया है। इस प्रतिमा में शिव के तीन प्रतीक-रूप परिलक्षित हैं। ये उनकी सृजन यानी कल्याण और संहार अर्थात् विनाश की ब्रह्मांडीय शक्ति का प्रतीक हैं। अष्टधातु की यह प्रतिमा प्रगति मैदान में 'भारत मंडपम' के द्वार पर लगाई गई है। इस प्रतिमा की आत्मा में सार्वभौमिक स्तर पर सर्व -कल्याण का संदेश अंतर्निहित है।

ऐसे में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सम्मेलन को सफलता के कितने निकट ले जा पाते हैं, यह उनकी कूटनीतिक गतिविधियों और वाक्चातुर्य पर निर्भर रहेगा। दरअसल मोदी विभिन्न देशों के बीच जो भी मतभेद हैं, उन्हें खत्म करने के इच्छुक हैं और विवादों के शांतिपूर्ण समाधान चाहते हैं। क्योंकि विवाद खत्म होंगे तो रूस और यूक्रेन के बीच चल रहा संघर्ष भी खत्म होने की अपेक्षा की जा सकेगी ? ऐसी ही शांति बहाली के बाद यूक्रेन में पड़ा अनाज जरूरतमंद देशों के पास पहुंचाया जा सकेगा और रूस के पास ऊर्जा का जो भंडार है, उसे यूरोपीय देशों तक पहुंचाना संभव होगा। वर्तमान में पश्चिमी देशों ने रूस पर अनेक प्रतिबंध लगा रखे है। नतीजतन भविष्य में रूस की अर्थवयवस्था प्रभावित हो सकती है ? लेकिन अभी तक उसकी अर्थव्यवस्था पर कोई असर दिखाई नहीं दे रहा है। दूसरी तरफ जो यूरोपीय देश गैस पर निर्भर हैं, उन्हें भविष्य में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। क्योंकि रूस ने गैस की आपूर्ति रोकी हुई है। सर्दी आते–आते जर्मनी जैसे देशों में गैस की कमी विकराल संकट का रूप ले सकती है। इस नाते भारत को तीन अलग–अलग जी–20 ऊर्जा उत्पादक देश (अमेरिका, रूस और सऊदी अरब) बनाम ऊर्जा उपभोक्ता (यूरोप और अन्य देश) देशों को एक साथ लाने में मुश्किल का सामना करना पड़ सकता है। यदि मोदी इन बाधाओं को सुलटाने में सफल हो जाते हैं तो मोदी वैश्विक नेता और भारत वैश्विक नेतृत्वकर्ता देश की श्रेणी में खड़ा हो जाएगा। चीन को भारत की यह प्रतिष्ठा क्यों सुहाएगी ?

(लेखक, साहित्यकार एवं वरिष्ठ पत्रकार हैं)

ISSN No. 2581-3528

शताब्दी वर्ष की ओर बढ़ता संघ

डॉ. नीलम कुमारी

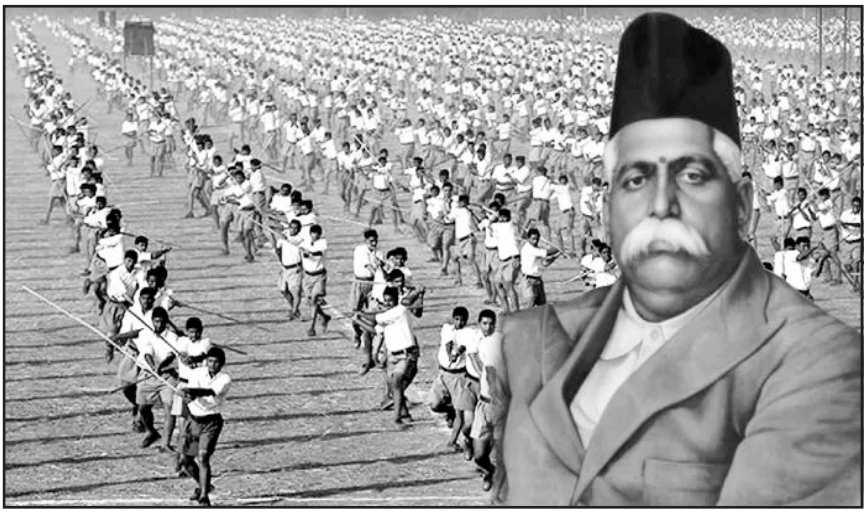

परं वैभवं नेतुमेतत् स्वराष्ट्रं
समर्था भवत्वाशिषाते भृशम्

राष्ट्र को परम वैभव के उच्चतम शिखर पर पहुंचने में समर्थ होने की नित्य प्रति साधना करने वाले स्वयंसेवकों के संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना 27 सितंबर 1925 को विजयादशमी के दिन परमपूज्य डॉक्टर केशव बलिराम हेडगेवार जी ने छत्रपति शिवाजी महाराज, संत ज्ञानेश्वर, समर्थ रामदास की परम पुण्य भूमि महाराष्ट्र के नागपुर में की थीं। 1925 में अंकुरित भारत का यह स्वयंसेवी संगठन आज विभिन्न विरोधाभाषों, विरोधों, षडयंत्रो का सामना करते हुए व नकारात्मक प्रवृत्तियों से लड़ते हुए 98 वर्षों की अपनी सफलतम यात्रा पूर्ण करते हुए स्वर्णिम शताब्दी वर्ष की ओर अग्रसर है और आज विश्व का सबसे बड़ा संगठन बन गया है। **चरैवेति चरैवेति** शुभंकर मंत्र के साथ नित नवीन कीर्तिमान स्थापित कर रहा है।

अनुशासित, संस्कारित व चरित्रवान स्वयंसेवकों के माध्यम से संगठित हिंदू राष्ट्र की संकल्पना के साथ संघ के परम पूज्य प्रथम संघचालक डॉ हेडगेवार जी ने अपने कुछ साथियों के साथ मिलकर इस संगठन की नींव डाली जो संगठित, अनुशासित, चरित्रवान और राष्ट्रीय भावना से परिपूर्ण पीढ़ियों का संवर्धन करता आ रहा है। संघ के संस्थापक जी ने जो लक्ष्य दिया था वह था भारत को परम वैभव के शिखर पर पहुंचने का, एक ऐसा राष्ट्र जो सनातन हिंदू संस्कृति के उत्कर्ष की शिला पर स्थित हो। जिसके समस्त घटक अनुशासित, चरित्रवान और संगठित हों। जिसकी संस्कृति वैदिक साहित्य में वर्णित आदर्श और सिद्धांतों पर टिकी हो। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जैसा कि नाम से ही प्रदर्शित होता है तीन शब्दों से मिलकर बना है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नाम में पहला शब्द राष्ट्रीय है इसलिए सबसे अधिक महत्व का भी है। संगठित करना, संस्कारित करना बिना स्वार्थ के कार्य करना किंतु किस लिए? उत्तर है राष्ट्र के लिए लेकिन राष्ट्र अर्थात क्या? तब राष्ट्र यानी लोग अब प्रश्न यह है कि किन लोगों का राष्ट्र? उसके लिए तीन शर्ते हैं, पहले जो इस देश को मातृभूमि मानते हैं। दूसरी जिनका अपना इतिहास है और अपने इतिहास पर गर्व है। तीसरी अपनी संस्कृति जिसके अच्छा बुरा तय करने के समान मापदंड हों। ऐसे लोगों का समूह राष्ट्र कहलाता है और राष्ट्र से ही राष्ट्रीय बना है दूसरा महत्व का शब्द है स्वयंसेवक। संघ का सबसे बड़ा बलस्थान स्वयंसेवक ही है उसी के भरोसे संघ आगे बढ़ा है। इसीलिए कहा जाता है कि संघ कुछ नहीं करता, स्वयंसेवक सब कुछ करते हैं डॉक्टर जी के समय स्वयंसेवक शब्द का अर्थ ही अलग था परंतु डॉक्टर जी ने इस शब्द का अर्थ ही बदल डाला स्वयंसेवक यानी देशभक्त नागरिक ऐसी प्रतिष्ठा उस शब्द को प्राप्त करा दी। डॉक्टर साहब ने स्वयंसेवक शब्द की परिभाषा देते हुए कहा कि 'हम सब अपनी मातृभूमि के स्वयंसेवक हैं, अर्थात् बदले में कुछ मिलेगा, ऐसी आशा या अपेक्षा न रखने वाले हम लोग हैं। इसलिए संघ में वेतन नहीं है और मानधन भी नहीं है'। अर्थात् स्वयंसेवक पूरे निस्वार्थ भाव से और राष्ट्र की, समाज की सेवा करता है। तीसरा शब्द है संघ। संघ का तात्पर्य है एकत्रीकरण या संगठन परंतु यहां संघ का अर्थ है संस्कार युक्त लोगों का एकत्रीकरण या संगठन और संघ के संस्कार में सर्वप्रथम है कि हम सब भारत माता के पुत्र हिंदू हैं। और हम सब एक हैं। दूसरा हम सब समान है, कोई छोटा या कोई बड़ा नहीं है। तीसरा व सबसे महत्वपूर्ण संस्कार है शाखा। शाखा के माध्यम से मैं केवल अपने लिए नहीं बल्कि समाज के लिए का संस्कार दिया जाता है। कहां जाता है कि संघ को समझना है तो शाखा में आओ और शाखा के माध्यम से ही व्यक्ति का चरित्र निर्माण फिर समाज और राष्ट्र का निर्माण होता है। डॉक्टर साहब ने भगवा ध्वज को अपना गुरु माना है जो त्याग का प्रतीक है, पवित्रता का चिन्ह है और पराक्रम की निशानी है। उसके भगवा रंग में पवित्रता और पराक्रम समाया है। संघ में छोटे–बड़े व अहंकार को समाप्त करते हुए इस भगवा ध्वज को साक्षी मानते हुए गुरु दक्षिणा कार्यक्रम की पद्धति प्रारंभ हुई।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ मात्र केवल एक विचार नहीं, केवल एक संस्था नहीं वह जीवन जीने की एक पद्धति है। जैसे व्यक्तिगत जीवन वैसे ही सामाजिक जीवन में भी यह जीवन पद्धति अर्थात् संघ की रीति

ISSN No. 2581-3528

कहलाती है। जैसे किसी परिवार की रीति बनती है वैसे ही संघ की भी बनी है। वह रीति पुस्तक लिखकर या अनेक भाषण देकर नहीं बनी है बल्कि उदाहरणों से बनी है। इस रीति के अंतर्गत सर्वप्रथम हम सब बराबर के हैं। दूसरा संघ में आपस में स्पर्धा के लिए स्थान नहीं है और सबसे महत्वपूर्ण अनुशासन व आज्ञापालन संघ की विशेष रीति है। सादगी से जीवन जीना यहाँ हमें सिखलाया जाता है और हम सभी संगठित रहें, स्वच्छ रहे एवं निर्मल भाव से मनुष्य का यह संगठन आगे भी चला रहे इसी भाव से संघ की रीति के साथ सभी स्वयंसेवक बड़े मनोभाव से कार्य करते हैं।

दैनिक शाखा संघ के कार्यक्रमों में सबसे अधिक महत्व का कार्यक्रम है। सुबह या शाम या रात्रि में कभी भी शाखा लगाई जा सकती है किंतु वह निश्चित समय पर प्रतिदिन लगनी चाहिए। प्रतिदिन भगवा ध्वज शाखा में लगाया जाना चाहिए। ध्वज प्रणाम करके ही शाखा प्रारंभ होनी चाहिए तथा प्रार्थना करके ही शाखा विसर्जित होनी चाहिए। शाखा 1 घंटे की रहती है वह ठीक समय पर आरंभ कर ठीक समय पर समाप्त हो जाती है। इससे सभी को समय पर सब काम करने की आदत पड़ती है। शाखा के माध्यम से हमें अपने आप देश के लिए और समाज के लिए क्या करना चाहिए यह संस्कार भी पुष्पित और पल्लवित किया जाता है। जब हम नित्य प्रतिदिन शाखा जाते हैं तभी हम राष्ट्र समर्पित, समाज परक और देशभक्ति से युक्त जीवन सहजता से जी सकते हैं। इस प्रकार का जीवन जीने का संस्कार हमारे मन पर दैनिक शाखा से ही पड़ता है और प्रतिदिन की आदत पड़ने से पूरा जीवन ही बदल जाता है दैनिक शाखा स्वयं के स्वार्थ को भुलाकर प्रतिदिन समाज का स्मरण करती है। इसलिए दैनिक शाखा का अपना अलग महत्व है। दैनिक शाखा संस्कार देने वाला एक विद्यालय भी है। देशभक्ति की एक उपासना है। जैसे हम प्रतिदिन भगवान का पूजन करते हैं भगवान का ध्यान करते हैं बिल्कुल उसी तरह देश पूजन के लिए शाखा होती है। शाखा का प्रत्येक छोटा या बड़ा कार्यक्रम बड़े महत्व का है खेल भी शाखा के ही अंतर्गत आता है जो ध्वज प्रणाम, दक्ष दंड वआराम के माध्यम से हमें एकता, धैर्य व शौर्य के संस्कार देते हैं। संस्कारों से ही संस्कृति उत्पन्न होती है और प्राणी मात्र संस्कारों से ही अच्छे जीवन को जीते हुए मोक्ष को प्राप्त करता है। इसके अतिरिक्त शीत शिविर, बैठके, संघ शिक्षा वर्ग बौद्धिक वर्ग, वर्ग साप्ताहिक एकत्रीकरण इन सब की रचना इसी उद्देश्य के साथ की जाती है। संघ के विभिन आयाम हैं। सन् 1925 में आरंभ हुए संघ में बाल स्वयंसेवक आए थे।

कालांतर में वे तरुण बने और उन्होंने अपने साथ अनेक तरूणों को जोड़ा स्वाभाविकतः संघ का पहला आयाम विद्यार्थी जगत की दिशा में हुआ सन 1949 में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की स्थापना हुई विद्यार्थियों में शील चेतना व युवा शक्ति को जाग्रत करने के लिए हुई। फिर राजनीति में सुचिता लाने के लिए जनसंघ की स्थापना 1950 में हुई। उसके बाद क्रमशः वर्ग संघर्ष की संकल्पना को अमान्य करते हुए 1955 में भारतीय मजदूर संघ की स्थापना हुई। इसके बाद अंग्रेजी शिक्षा के प्रभाव को दूर करने के लिए शिशु मंदिर फिर विद्या भारती और धार्मिक क्षेत्र में विश्व हिंदू परिषद वनवासी कल्याण आश्रम आदि की स्थापना हुई। संघ ने इस अवधि में डॉक्टर हेडगेवार जी(1925 से 1940) के बाद पांच सरसंघचालक देखे हैं। संघ में सरसंघचालक का पद सर्वोच्च होता है। डॉक्टर साहब के बाद माधव सदाशिव गोलवलकर (1940–1973) उपाख्य गुरुजी द्वितीय सरसंघचालक थे। उन्होंने अपने उत्तराधिकारी के रूप में बाला साहब देवरस को नामित किया था। उनका पूरा नाम मधुकर दत्तात्रेय देवरस (1973– 1993) था। उत्तराधिकारी चयन की प्रक्रिया के अंतर्गत बाला साहब जी ने प्रोफेसर राजेंद्र सिंह उपाख्य रज्जू भैया (1993–2000) को सरसंघचालक नियुक्त किया। उसके बाद कुप्पाहल्ली सितारमैया सुदर्शन (2000–2009) बने जिन्होंने अपने जीवन काल में ही डॉक्टर मोहन राव मधुकर राव भागवत (मार्च 2009 .....) उपाख्य मोहन भागवत को वर्तमान सरसंघचालक के रूप में दायित्व प्रदान किया। इस प्रकार सरसंघचालकों के त्याग, तपस्या व बलिदान के कारण आज संघ एक वटवृक्ष के रूप में अपनी शाखाओं को न केवल भारत मे बल्कि विदेशों में भी फैला रहा है।

बिना किसी स्वार्थ के, बिना किसी लोभ या पद के लालच के, सेवा भाव से स्वयंसेवक अनवरत कार्यरत रहते हैं। निजी महत्वाकांक्षा त्यागकर तन समर्पित मन समर्पित चाहता हूँ मेरे देश की माटी तुझे कुछ और भी दूं के भाव से परिपूर्ण स्वयंसेवको की श्रृंखला के कारण यह संगठन निरंतर बढ़ता आया है। विषम परिस्थितियों में, बहुत विरोध, प्रतिरोध, अवरोध सहते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का प्रसार बहुत तीव्र गति से हुआ है। 30 जनवरी 1948 में गाँधी जी की हत्या के बाद,1975 में आपातकाल के तीसरी बार 1992 में बाबरी मस्जिद मामले के दौरान संघ को प्रतिबंध लगा। परंतु इतने विरोधों का सामना करने के बाद भी संघ का विस्तार बहुत तेज गति से हुआ है। आज संघ के सहयोगी संगठनों की संख्या तो लगभग 40 है किंतु संगठनों से जुड़ी संस्थाओं और इकाइयों की भी गणना की जाए तो यह संख्या 80 से अधिक है भारत के अलावा 120 देश में संघ से जुड़ी संस्थाएं किसी न किसी रूप में कार्यरत हैं। संघ अब सर्वस्पर्शी संगठन हो चुका है भारत में रहने वाले प्रत्येक नागरिक में राष्ट्रीय भावना का जागरण हो यही संघ का पावन उद्देश्य है। संघ के बारे में हो रहे शोध कार्य इस बात को प्रमाणित कर रहे हैं कि यह संगठन आदर्श को आचरण में उतारकर सच्चे अर्थों में राष्ट्र सेवा के लक्ष्य में जुटा है व भारत माँ को परम वैभव के उच्च शिखर पर ले जाने के लिए परम लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कृत संकल्पित है।

दिव्य साधना राष्ट्र देव की, खिले सुगंधित हृदय सुमन ।
ध्येय एक ही भारत माँ की गूंजे जय जय विश्व गगन ।।

संदर्भ सूची – 1. मा0 गो0 वैध, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का परिचय ,विचार विनिमय प्रकाशन 2015।

2. सुनील आंबेकर, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ स्वर्णिम भारत के दिशा सूत्र, प्रभात पेपर बैंक्स 2021।

3 मोहन भागवत, यशस्वी भारत प्रभात पेपर बैक्स 2021।

4.नरेंद्र भदोरिया, राष्ट्रीयता के विजय पर्व के 94 वर्ष, केशव संवाद अक्टूबर 2019

5. महावीर अग्रवाल, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एवं स्वदेशी केशव संवाद जनवरी 2021।

(लेखिका किसान पी. जी. कॉलेज सिम्भावली (हापुड़) में अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्ष के पद पर कार्यरत हैं)

ISSN No. 2581-3528

शक्ति जागरण का पर्व : विजयादशमी

डॉ. पायल अग्रवाल

शक्ति आराधना का पर्व विजयादशमी (24 अक्टूबर) अश्विन शुक्ल दशमी को देश ही नहीं अपितु विश्व भर के हिंदुओं के बीच धूमधाम से मनाया जाता है। असत्य पर सत्य की विजय का प्रतीक यह पर्व समस्त मानव मात्र के कल्याण की संकल्पना पर आधारित है। नौ दिनों तक माँ दुर्गा की आराधना के पश्चात् समस्त आसुरी प्रवृत्तियों का दहन, दसवें दिन किया जाता है। केवल रावण, कुंभकर्ण, ,मेघनाद की ही नहीं वरण समाज में व्याप्त सभी आसुरी प्रवृत्तियों का विसर्जन हो, इसी भाव के साथ परम पूजनीय लक्ष्मीबाई केलकर उपाख्य वंदनीय मौसी जी ने विजयादशमी के दिन 25 अक्टूबर, सन् 1936 में वर्धा (महाराष्ट्र) में राष्ट्र सेविका समिति की स्थापना की। राष्ट्र सेविका समिति की स्थापना का उद्देश्य पराधीन राष्ट्र की महिलाओं की क्षीण प्राण शक्ति में अलौकिक राष्ट्र भक्ति का संचार कर उनके मन में तेजस्विनी नारी का भाव जागृत करना था। राष्ट्र के निर्माण में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी की पक्षधर वंदनीया मौसी जी का मानना था कि व्यक्ति निर्माण से ही समाज व राष्ट्र का निर्माण संभव है। शाखा में जाने के उपरांत अपने पुत्रों में आए परिवर्तन को देखकर पूजनीय लक्ष्मीबाई केलकर जी डॉक्टर हेडगेवार से मिलीं। उन्हीं की प्रेरणा से 25 अक्टूबर,1936 में विजयादशमी के दिन वर्धा (महाराष्ट्र) में राष्ट्र सेविका समिति की स्थापना हुई। पूजनीय लक्ष्मीबाई केलकर उपाख्य वंदनीय मौसी जी ने पराधीन भारत की महिलाओं में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के भाव का बीजारोपण कर उन्हें समर्थ, निडर, आत्मनिर्भर बनने को प्रेरित किया। सुंदर समाज व राष्ट्र के निर्माण में मातृशक्ति का क्या योगदान हो, इस चिंतन के साथ अपनी स्वर्णिम संस्कृति के प्रति आत्मबोध का भाव जागृत किया। उन्होंने महिलाओं को सीता, सावित्री, दुर्गा जैसी नारियों के गुणों को आत्मसात् करने की प्रेरणा दी। समिति का मानना है कि राष्ट्र तभी परम वैभव को प्राप्त कर सकता है, जब उस देश की मातृ शक्ति अपने अंदर राष्ट्र निर्माण का भाव रखेंगी और भारत माता को दासता की बेड़ियों से मुक्त कर स्वतंत्र राष्ट्र के उत्थान में अपना सहयोग देंगी। उनका उद्देश्य इस देश में एक ऐसी भावी पीढ़ी तैयार करना था जिसका लक्ष्य राष्ट्र के खोये गौरव को प्राप्त करना हो।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से प्रेरित होकर परम पवित्र भगवा ध्वज को ही अपना गुरु मानकर कुछ बालिकाओं के साथ राष्ट्र सेविका समिति की शाखा का संचालन शुरू किया गया।

नित्य शाखा में भारत की महान नारियों की चर्चा होती : इन शाखाओं में नित्य भारत की महान नारियों, उनकी विद्वत्ता, त्याग

ISSN No. 2581-3528

व बलिदान की चर्चा होती। अपने राष्ट्र को परम वैभव पर ले जाना यही राष्ट्र सेविका समिति का ध्येय है। इस हेतु राष्ट्र सेविका समिति ने स्त्री के आवश्यक गुण, उसकी सुप्त शक्ति, उसकी अंतः चेतना जागृत हो इसी दृष्टि से सन् 1950 में राष्ट्र सेविका समिति ने अपनी आराध्या देवी अष्टभुजा का प्रतीक सर्वप्रथम सेविकाओं के समक्ष रखा। स्त्री में मानव कल्याणार्थ तीन प्रेरक, मारक, तारक शक्तियाँ होती हैं। देवी अष्टभुजा के एक हाथ में कमल, दूसरे हाथ में पुस्तक, तीसरे में खड्ग तो एक हाथ में त्रिशूल है तो चेहरे पर करूणा का भाव भी है जो यह दर्शाता है कि स्त्री सभी गुणों से युक्त है। भारतवर्ष का इतिहास जीजाबाई, तारा, लक्ष्मीबाई, हाडा रानी पन्नाधाय जैसी बलिदानी व त्यागमयी नारियों से भरा है। इसी प्रकार भारतीय स्त्रियाँ पुत्री, बहन, माँ, पत्नी जैसी अवस्था में हिंदू समाज को नव दिशा देकर समाज को दिशा देती आई हैं। समिति ने तीन नारी शक्ति को अपना आदर्श माना है। ये प्रेरक महिलाएँ हैं :– आदर्श मातृत्व स्वरूप जीजाबाई जिन्होंने शिवाजी को हिंदू राष्ट्र स्थापित करने की प्रेरणा दी। कर्तृत्व के लिए महारानी अहिल्याबाई होल्कर जिनकी न्यायप्रियता व प्रजावत्सलता आज भी उद्धरणीय है। उन्होंने काशी विश्वनाथ सहित कई मंदिरों का जीर्णोद्धार करवा हिंदू गौरव को पुनः स्थापित किया। कुशल नेतृत्व के लिए समिति की आदर्श महारानी लक्ष्मीबाई जिनके शौर्य व पराक्रम का लोहा दुश्मन भी मानते थे। जिस संगठन की आदर्श ऐसी महिलाएँ हों उसके कार्य भी समाज में ऐसे ही पदचिन्ह छोड़ जाते हैं।

पूजनीय लक्ष्मीबाई केलकर,सरस्वती ताई द्वारा पोषित, पल्लवित राष्ट्र सेविका समिति आज वट वृक्ष रूप धारण कर चुकी है। आज समिति का कार्य अखिल विश्व में फैल चुका है। समिति की शाखाओं में आज हर उम्र की महिलाएँ, बालिकाएँ हैं जहाँ पर परंपरागत खेल, योगासन, शस्त्र संचालन, नियुद्ध, देश भक्ति गीत को सिखाने के साथ सामाजिक, राष्ट्रीय, स्थानीय विषयों की सामूहिक चर्चा आदि होती है जिसके माध्यम से बहनों का

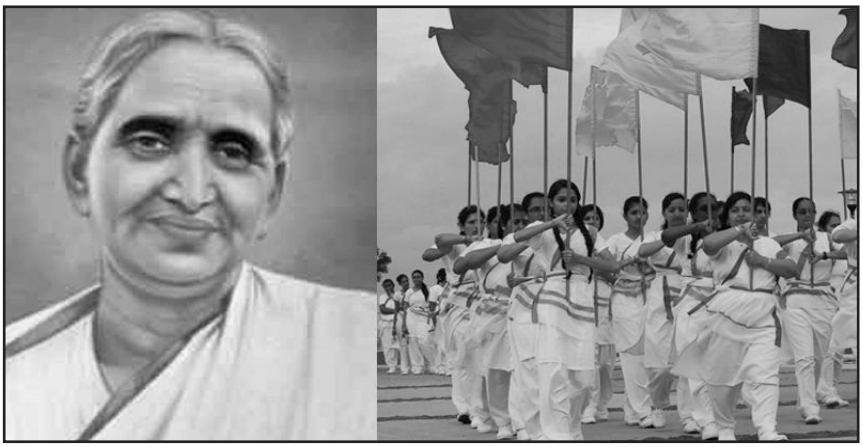

परम पूजनीय लक्ष्मीबाई केलकर उपाख्य वंदनीय मौसी जी ने विजयादशमी के दिन २५ अक्टूबर, सन् १९३६ में वर्धा (महाराष्ट्र) में राष्ट्र सेविका समिति की स्थापना की। राष्ट्र सेविका समिति की स्थापना का उद्देश्य पराधीन राष्ट्र की महिलाओं की क्षीण प्राण शक्ति में अलौकिक राष्ट्र भक्ति का संचार कर उनके मन में तेजस्विनी नारी का भाव जागृत करना था। राष्ट्र के निर्माण में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी की पक्षधर वंदनीया मौसी जी का मानना था कि व्यक्ति निर्माण से ही समाज व राष्ट्र का निर्माण संभव है।

शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक विकास होता है।

राष्ट्र सेविका समिति में पाँच उत्सव मनाए जाते हैं। ये उत्सव हैं :– 1. वर्ष प्रतिपदा (हिंदू नव वर्ष) 2. गुरु पूर्णिमा, 3. रक्षाबंधन, 4. विजयादशमी तथा 5. मकर संक्रांति। इसके अलावा स्थानीय उत्सव भी शाखा पर मनाए जाते हैं। ये सभी उत्सव हिंदू चिंतन, राष्ट्र प्रेम, समरस स्वस्थ समाज, नारी सशक्तिकरण के भाव को दर्शाते हैं। राष्ट्र सेविका समिति फेमिनिज्म नहीं फैमिलिज्म की बात करती है। स्त्री पुरुष अलग–अलग नहीं बल्कि राष्ट्र के विकास रथ के दोनों आवश्यक अंग हैं। हाँ, समाज के उत्थान में मातृ शक्ति का योगदान ज्यादा है। आज पूरे देश में नारी शक्ति वंदन की बात की जा रही है। वस्तुतः समिति के आरंभ काल से ही 'स्त्री राष्ट्र की आधारशिला है' इस ध्येय वाक्य के साथ समिति कार्य कर रही है। आज नेपाल, अमेरिका, ब्रिटेन, मॉरीशस, अफ्रीका, न्यूजीलैंड, जावा, ऑस्ट्रेलिया, फिजी इत्यादि देशों में हिंदू सेविका समिति के नाम से समिति स्थानीय भारतीय महिलाओं में हिंदू जीवन मूल्यों का संवर्धन और संरक्षण कर रही है। भारतीय परंपरा, संस्कृति, राष्ट्र प्रेम के भाव को जागृत कर रही है। अनेक विदेशी महिलाएं भी समिति के अनुशासन और मानव कल्याणार्थ विचारधारा से प्रभावित होकर समिति की शाखा में आती हैं। आज समिति के कार्य क्षेत्र का व्यापक विस्तार हो चुका है। आज राष्ट्र सेविका समिति की निगरानी में कई संस्कार केंद्र, किशोरी विकास शिविर, छात्रावास, आरोग्य शिविर, एन जी ओ, स्वयं सहायता समूह का संचालन भली भाँति हो रहा है। आज राष्ट्र सेविका समिति से 3 लाख से ज्यादा सेविकाएँ जुड़ी हुई हैं जो निरंतर शाखा, मासिक मिलन, गोष्ठी तथा बौद्धिक सम्मेलन के माध्यम से समाज व राष्ट्र प्रेम की अलख जगा रही हैं। आज देश में लगभग साढ़े चार हजार शाखाएँ लग रही हैं जिसमें सेविकाएँ निष्ठापूर्वक अपने राष्ट्र को परम वैभव की ओर ले जाने हेतु प्रयासरत हैं।

(लेखिका शिक्षाविद, सामाजिक कार्यकर्ता, मोटिवेशनल स्पीकर हैं)

ISSN No. 2581-3528

वर्तमान भारतीय सिविल सेवाओं हेतु सरदार वल्लभभाई पटेल का योगदान

श्रीमती सोनम

विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र हमारा देश भारत है और किसी भी लोकतंत्र में सरकार के कार्यक्रमों के सुचारू क्रियान्वयन व कामकाज के लिए रास्ते बनाने और लोगों तक लाभ पहुंचाने को सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार सिविल सेवक प्रशासन की रीढ़ होते हैं। सिविल सेवक ही सरकारी नीतियों के कार्यान्वयन को सुनिश्चित करते हैं। इस बात से सरदार वल्लभभाई पटेल भलीभांति परिचित थे। अपने अदम्य साहस और कार्यक्षमता के बल पर स्वातंत्र्योत्तर भारत में 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के गुण–सूत्र का संवहन करते हुए सरदार पटेल ने स्वतंत्रता के पश्चात सशक्त एवं समृद्ध भारत की निर्मिति हेतु पूर्ण समर्पित भाव से अपनी ऊर्जा का सदुपयोग किया। समस्त चुनौतियों के बावजूद अद्भुत कौशल एवं रणनीति के साथ सरदार पटेल ने प्राणपण से इस कार्य को संपूर्ण किया और एकीकृत भारत के वास्तुकार बन गए।

अधिकांशतः हम सरदार पटेल को राष्ट्र की एकता, अखंडता के लिए ही जानते है। परन्तु सरदार पटेल को आधुनिक अखिल भारतीय सेवाओं की स्थापना करने हेतु 'भारतीय सिविल सेवकों के संरक्षक संत' के रूप में भी जाना जाता है। सरदार वल्लभभाई पटेल ने 1947 में नव–एकीकृत भारतीय प्रशासनिक सेवाओं के अंतर्गत पहले बैच को संबोधित भी किया था। भारत के 'लौह पुरुष' के रूप में जाने जाने वाले पटेल को 'भारतीय सिविल सेवाओं के पिता' और आईएएस के 'संरक्षक संत' के रूप में भी जाना जाता था क्योंकि उन्होंने इनके ब्रिटिश स्वरुप को बदल दिया था। आजादी के बाद जब नया संविधान बना, तो आईसीएस में मामूली बदलाव किया गया, इसका नाम बदलकर भारतीय प्रशासनिक सेवा यानि इंडियन एडमिनिस्ट्रेटिव सर्विसेज (आईएएस) कर दिया। सरदार पटेल ने तब नेहरू से स्पष्ट रूप से कहा, भारत को एकजुट रखना आईसीएस अफसरों के बगैर नामुमकिन होता।

भारत की स्वतंत्रता के पश्चात सरदार वल्लभभाई पटेल ने सिविल सेवा को अलगावों से ग्रसित एक देश को प्रशासनिक रूप से एकजुट करने वाली एक शक्ति के रूप में देखा, उन्होंने भारतीय सिविल सेवाओं को भारतीय लोकतांत्रिक एवं कल्याणकारी राज्य के आदर्शों को लागू करने का साधन बनाया तथा इन सेवाओं ने 'स्टील फ्रेम' की तरह कार्य करते हुए भारतीय एकता, अखंडता और संप्रभुता को अक्षुण्ण बनाने का कार्य किया। सिविल सेवाएं प्रशासन, नीतियों के निर्माण और लोकतंत्र के क्रियान्वयन में एक आवश्यक भूमिका निभाने में सहायक हैं। लोकतंत्र के तीन प्रमुख स्तंभ हैं– विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका। सिविल सेवा इन तीन

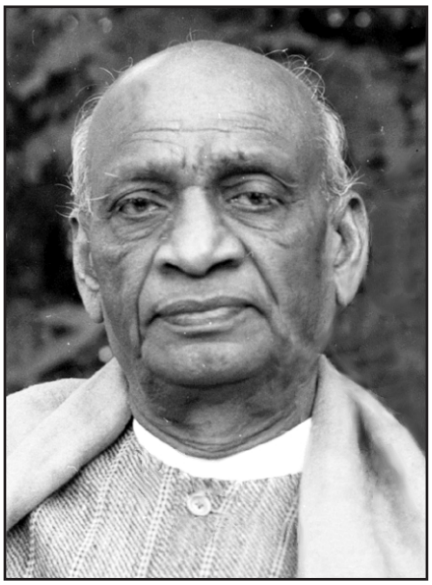

स्तंभों में कार्यपालिका का एक महत्वपूर्ण भाग है। कार्यपालिका में मंत्री और सिविल सेवक होते हैं। लोकतंत्र में मंत्री अस्थायी होते हैं क्योंकि लोकतंत्र में एक निश्चित अवधि के बाद उन्हें बदल दिया जाता है और फिर से चुना जाता है। फिर भी, सिविल सेवक कार्यकारी स्थायी अंग हैं। इस प्रकार लोक सेवक लोकतंत्र में सरकार के उपविभाग और विशेषज्ञ प्रशासक होते हैं।

सरदार वल्लभभाई पटेल जानते थे कि सिविल सेवा एक नीति या कानून बनाने की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है– नियमों और विनियमों का निर्माण, निष्पादन, निगरानी, मूल्यांकन और कार्यान्वयन। इसका अखिल भारतीय चरित्र राज्यों और लोगों को एक साथ बांधता है तथा अलगाववादी और संकुचित मानसिकता का दमन करती है। वे कहते थे कि सिविल सेवा एक देश को प्रशासित करने में अहम भूमिका निभाती है, न केवल कानून और व्यवस्था

ISSN No. 2581-3528

बनाए रखने में, बल्कि उन संस्थानों को चलाने में, जो एक समाज को बाध्यकारी सीमेंट प्रदान करते हैं। अपने इसी दृष्टिकोण से सरदार वल्लभभाई पटेल ने भारतीय सिविल सेवाओं को "भारत का स्टील फ्रेम" की संज्ञा से विभूषित किया। और भारतीय परिदृश्य के अनुसार इसमें थोड़ा परिवर्तन भी किया। देश में सत्ता का हस्तांतरण से लगभग चार माह पूर्व 21 अप्रैल 1947 को दिल्ली की यमुना नदी के किनारे बने अखिल भारतीय प्रशासनिक सेवा प्रशिक्षण स्कूल मेटकाफ हाउस में, सरदार वल्लभभाई पटेल ने इस स्कूल के पहले प्रशिक्षणार्थियों के समूह को अपने संबोधन में कहा था, "आप भारतीय सेवा के अग्रणी हैं और इस सेवा का भविष्य आपके कार्यो, आपके चरित्र और क्षमताओं सहित आपकी सेवा भावना के आधार से रखी नींव और स्थापित परंपराओं पर निर्भर करेगा।" इस स्कूल में प्रशिक्षण लेने वाले भारतीय प्रशासनिक सेवा के 24 और भारतीय विदेश सेवा के नौ परिवीक्षकों को उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा था, "शायद आप पिछली सिविल सेवा, जिसे इंडियन सिविल सर्विस के नाम से जाना जाता है, उसे लेकर भारत में प्रचलित एक कहावत से परिचित हैं जो न तो भारतीय है, न ही सिविल है और उसमें सेवा की भावना का भी अभाव है। सही मायने में, यह भारतीय नहीं है, क्योंकि भारतीय सिविल सेवा के अधिकारी अधिकतर अंग्रेजीदां हैं, उनका प्रशिक्षण विदेशी जमीन पर हुआ था और उन्हें विदेशी आकाओं की चाकरी करनी थी। इस कारण प्रभावी रूप से यह पूरी सेवा, भारतीय न होने, न ही नागरिकों के प्रति शिष्ट होने और न ही सेवा भावना से ओतप्रोत होने के लिए जानी जाती थी। फिर भी इसकी पहचान भारतीय सिविल सेवा के रूप में होती थी। अब यह बात बदलने जा रही है।"

सरदार वल्लभभाई पटेल आई सी एस (इन्डियन सिविल सर्विस) से आई ए एस (इन्डियन एडमिनिस्ट्रेटिव सर्विस / भारतीय प्रशासनिक सेवा) तथा आई पी (इंपीरियल पुलिस) से आई पी एस (इन्डियन पुलिस सर्विस / भारतीय पुलिस सेवा) किया। संविधान सभा में भी उन्होंने इसकी महत्ता पर भाषण दिया– "इस प्रशासनिक व्यवस्था का कोई विकल्प नहीं है... संघ जाएगा, आपके पास एक अखंड भारत नहीं होगा यदि आपके पास अच्छी अखिल भारतीय सेवा नहीं है जिसके पास अपने मन की बात कहने की स्वतंत्रता है, जिसमें सुरक्षा की भावना है कि आप आपके काम में साथ

भारत की स्वतंत्रता के पश्चात सरदार वल्लभभाई पटेल ने सिविल सेवा को अलगावों से ग्रसित एक देश को प्रशासनिक रूप से एकजुट करने वाली एक शक्ति के रूप में देखा, उन्होंने भारतीय सिविल सेवाओं को भारतीय लोकतांत्रिक एवं कल्याणकारी राज्य के आदर्शों को लागू करने का साधन बनाया तथा इन सेवाओं ने 'स्टील फ्रेम' की तरह कार्य करते हुए भारतीय एकता, अखंडता और संप्रभुता को अक्षुण्ण बनाने का कार्य किया। सिविल सेवाएं प्रशासन, नीतियों के निर्माण और लोकतंत्र के क्रियान्वयन में एक आवश्यक भूमिका निभाने में सहायक हैं।

देंगे... ये लोग निमित्त हैं। उन्हें हटा दें और मुझे पूरे देश में अराजकता की तस्वीर के अलावा कुछ नहीं दिखता।"

सरदार पटेल ने अंतरिम सरकार के अपने पूर्ववर्ती अनुभवों को स्मरण रखते हुए 10 अक्तूबर 1949 को भारतीय संविधान सभा की बहस में कहा था, "मैं इस सभा के रिकार्ड के लिए यह कहना चाहता हूं कि यदि गत दो या तीन वर्षों में सिविल सेवाओं के अधिकारियों ने देशभक्ति की भावना से और निष्ठा से काम नहीं किया होता तो यह संघ समाप्त हो गया होता। आप सभी प्रांतों के प्रीमियरों से पूछिए। क्या कोई भी प्रीमियर सिविल सेवा अधिकारियों के बिना काम करने को तैयार है? वह तत्काल त्यागपत्र दे देगा। उसका गुजारा नहीं है। हमारे पास सिविल सेवा के बचे हुए कुछ ही अधिकारी थे। हमने उन थोड़े से व्यक्तियों के साथ बहुत कठिनाई से कार्य किया है।"

स्वतंत्र भारत में भारतीय प्रशासनिक सेवा की भर्ती के लिए पहली प्रतियोगी परीक्षा जुलाई 1947 में आयोजित हुई। इससे पूर्व इंडियन सिविल सर्विस के लिए चयनित, लेकिन वास्तव में उस सेवा में नियुक्त नहीं किए गए व्यक्तियों को भी भारतीय प्रशासनिक सेवा में सम्मिलित कर दिया गया। यह सरदार पटेल की पहल का ही परिणाम था कि केंद्रीय गृह मंत्रालय ने एक अक्तूबर, 1947 को प्रशासनिक तंत्र का भारतीय नामकरण करते हुए अंग्रेजों की इंडियन सिविल सर्विस को भारतीय प्रशासनिक सेवा (आइएएस) और इंडियन पुलिस को और भारतीय पुलिस सेवा (आइपीएस) के रूप में नामित करने की सार्वजनिक घोषणा की।

सरदार पटेल भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में एक महान हस्ती थे। पटेल जी की दृढ़ शक्ति, दृढ़ कार्रवाई की क्षमता, त्वरित निर्णय लेने की क्षमता, राष्ट्रीय गौरव की भावना और कुशल वाकपटुता उनके मजबूत और ठोस व्यक्तित्व के विभिन्न आयाम थे जो उन्हें अन्य नेताओं से विशिष्ट बनाते हैं। उन्होंने अपने जीवनकाल में प्रशासन की स्थिरता, उसे पुनः सबल बनाने का कार्य तथा सिविल सेवाओं के मनोबल को ऊंचा रखने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए।

(लेखिका डी.पी.एम. इंस्टिट्यूट ऑफ एजुकेशन बहसूमा, चौ. चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ में असिस्टेंट प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हैं

ISSN No. 2581-3528

नारी सशक्तिकरण को समर्पित नारी शक्तिवंदन अधिनियम

श्रेयांशी

भारतीय परम्परा में नारी का स्थान बहुत ही उच्च है। चाहे अर्धनारीश्वर की अवधारणा हो या काली, दुर्गा की, नारी सर्वत्र सम्मानीय है। इसलिए भारत की परंपरा में नारी को जो स्थान दिया गया है विश्व में वह अनुकरणीय भी है–

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।।'

–मनुस्मृति ३/५६

अर्थात् – 'जहाँ स्त्रियों की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं और जहाँ नारियों की पूजा नहीं होती, उनका सम्मान नही होता, वहाँ किए गए समस्त अच्छे कर्म भी निष्फल हो जाते हैं।' तथा

"शोचन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम्
न शोचन्ति तु यत्रैता वर्धते तद्धि सर्वदा ।।"

–मनुस्मृति ३/५७ ।।

अर्थात् – "जिस कुल में नारियां कष्ट भोगती हैं, वह कुल शीघ्र ही नष्ट हो जाता है और जहाँ नारियां प्रसन्न रहती हैं वह कुल सदैव फलता फूलता और समृद्ध रहता है।" मनु स्मृति में आया हुआ यह श्लोक नारियों की स्थिति को लेकर भारत के वास्तविक दर्शन को प्रस्तुत करता है। यह वही मनुस्मृति है जिसे सनातन जीवन शैली का संविधान भी कहा जा सकता है। परन्तु सर जॉन जॉर्ज वुड्रोफ़ (15 दिसंबर 1865–16 जनवरी 1936) नामक एक लेखक ने, जिन्हें उनके छद्म नाम आर्थर एवलॉन के नाम से भी जाना जाता है, ने हमारे लगभग 20 संस्कृत ग्रंथों का अनुवाद कर षड्यंत्रपूर्वक हमारे सनातन मूल्यों व शैक्षणिक विरासत के मूल तत्वों को अनेक भागों में विभाजित करके ऐसा विमर्श खड़ा कर दिया कि वैदिक कालीन भारत से लेकर वर्तमान समय तक जाति व समाज में भेदभाव, महिला व पुरुषों में भेदभाव, तथा व्यवसायों व कार्यों के आधार पर भेदभाव ऐसे वर्णित कर दिया जैसे कि यह सब वेदों, पुराणों, उपनिषदों में वर्णित आधारों पर समाज में पहले से ही व्याप्त रहा हो।

हालाँकि मध्यकाल में भारत में भी बहुत सी ऐसी घटनाएँ हुई जिनके कारण नारी की सम्मानजनक स्थिति में काफी गिरावट आयी। लेकिन आधुनिक काल में भारतीय संविधान नारी को पूर्ण सम्मान और श्रद्धा के साथ पुनर्स्थापित करने में प्राणपण से जुटी है। वर्तमान में हम महिलाओं के सशक्तिकरण की बात करते हैं, किंतु वास्तविकता कुछ और ही है। हमारे देश की जनसंख्या में नारियां लगभग 50 प्रतिशत हैं, लेकिन जब हम विधान सभा, विधान परिषद्, राज्य सभा, और लोकसभा की स्थिति देखते हैं तो वहां नारियों की बहुत कम संख्या दिखाई देती है। एसोसिएशन फॉर डैमोक्रेटिक रिफार्म के आंकड़े दर्शाते हैं कि संसद के दोनों सदनों में नारियों की संख्या 10 प्रतिशत से कम है। लोकसभा में नारियों की संख्या 15 प्रतिशत से कम तथा 24 प्रतिशत के वैश्विक औसत से काफी कम है। त्रिपुरा, नागालैंड, अरुणाचल प्रदेश और जम्मू–कश्मीर जैसे राज्यों से एक भी सांसद नारी नहीं है। वर्ष 1950 में संसद में नारियों की संख्या 5 प्रतिशत थी किन्तु पिछले 73 वर्षों में इसमें केवल 9 प्रतिशत की ही वृद्धि हुई है जो कि इस दिशा में किये गये प्रयासों की धीमी गति को दर्शाता है राज्य विधानसभाओं में तो नारियों का प्रतिनिधित्व और भी कम है। असम, अरुणाचल प्रदेश और कर्नाटक में यह 5 प्रतिशत से कम है तो मिजोरम में शून्य है, जबकि नागालैंड में केवल एक नारी विधायक है। हरियाणा और बिहार में यह आंकड़ा 10 प्रतिशत हैं।

यदि पिछले चुनावों पर दृष्टिपात करें तो 8,000 उम्मीदवारों में से केवल 724 नारियां उम्मीदवार थीं। कांग्रेस ने 54 अर्थात् 13 प्रतिशत, भाजपा ने 53 अर्थात 22 प्रतिशत, बसपा ने 24, तृणमूल ने 23, बीजद ने 33 प्रतिशत, माकपा ने 10, सी.पी.आई. ने 4 और राकांपा ने 1 नारी अर्थात् अपनी बेटी को चुनाव में खड़ा किया था। लगभग 222 नारियों ने निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ा। यही नहीं, लगभग आधी आबादी होने के

ISSN No. 2581-3528

पश्चात भी आज पुरुषों के मुकाबले केवल गिनी–चुनी ही नारियां कुछ राजनैतिक दलों की नेता हैं। यह इस देश का दुर्भाग्य ही कहा जायेगा कि स्वतंत्रता के बाद बारात में प्राचीनकाल से पूजी जाने वाली नारियां दोयम दर्जे की नागरिक बन कर रह गई, यहाँ पर नारियां न केवल अवांछित बनी रहीं बल्कि लगातार उनकी उपेक्षा की गई जबकि राजनीतिक दलों में ऐसी नारियों की कमी नहीं रही, जिन्हें दलों द्वारा नजरअंदाज किया जाता रहा और चुनाव लडऩे के लिए उन्हें टिकट नहीं दिया गया।

वर्तमान सरकार ने बालिका के जन्म से लेकर वृद्ध माता तक, बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ से लेकर सुकन्या समृद्धि योजना तक, तीन तलाक को दंडनीय बनाने से लेकर महिलाओं के प्रति अपराधों के लिए कानूनी प्रावधानों को कड़ा करने तक नारी शक्ति वंदन की पूरी शृंखला चलाकर पहले यह सुनिश्चित किया कि मिलने वाले अवसरों का लाभ उठाने के लिए महिलाएं सक्षम और समर्थ हों। कहते हैं कि सरोजिनी नायडू ने सन् 1931 में सबसे पहले महिला अधिकारों से संबंधित मुद्दों पर ब्रिटिश पीएम को पत्र लिखकर महिलाओं के राजनीतिक अधिकार को लेकर बात की थी। उनके मुताबिक महिलाओं को मनोनीत करके किसी पद पर बैठाना एक किस्म का अपमान है। वह चाहती थीं कि, महिलाएं मनोनीत न हों, बल्कि चुनी जाएं। सरोजिनी नायडू के द्वारा आजादी से 17 साल पहले ही उठाए गए इस कदम ने आने वाले दिनों में महिलाओं के आरक्षण संबंधी बहस को जन्म दिया। नारियों की राजनितिक भागीदारी को लेकर महिला आरक्षण विधेयक 1996 के बाद कई बार बहस का मुद्दा बना 2010 में राज्य सभा से पास होने के बाद भी लोकसभा में पेश नहीं हो सका। जिस वजह से यह बिल अधर में लटका रहा। यह बिल लगभग 27 वर्षों से अधर में लटका हुआ था। परन्तु वर्ष 2023 में माननीय नरेन्द्र मोदी जी के द्वारा यह बिल नवीन संसद भवन में दूसरे दिन पारित कराया गया जो कि लोकसभा में 2 के मुकाबले 454 के बहुमत से और राज्यसभा में सर्वसम्मति से इस विधेयक को पारित कर दिया गया। नारी शक्ति वंदन विधेयक को 20 सितंबर 2023 को लोकसभा और 21 सितंबर 2023 को राज्यसभा से पारित किया गया था और 29 सितंबर 2023 को इस विधेयक को राष्ट्रपति ने भी अनुमोदन कर दिया। आखिरकार राष्ट्रपति के अनुमोदन के बाद नारी शक्ति वंदन अधिनियम के कानून बनने के साथ ही देश की आधी आबादी की एक लंबे अरसे से चली आ रही राजनैतिक अधिकारों की लड़ाई का सुखद समापन हो ही गया। इसके साथ ही देश के संसदीय इतिहास में 1996 से चले आ रहे और कुल मिलाकर 27 साल, 5 प्रधानमंत्री और अनेकों बार पेश होने के बाद इस ऐतिहासिक निर्णय को मंजूरी मिल गई जिसमें महिलाओं के लिए लोकसभा व् राज्य विधानसभाओं में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति वर्ग के साथ एक–तिहाई सीटें, निर्वाचन क्षेत्रों के पुनःनिर्धारण के बाद से आरक्षित होनी शुरू हो जाएंगी। इस विधेयक के पारित होने से लोकसभा में महिलाओं की संख्या कम से कम 181 तक पहुंच जाएगी। राष्ट्रपति की ओर से मंजूरी मिलते ही यह विधेयक अब कानून बन गया है। यह नारी शक्ति वंदन अधिनियम सामाजिक और आर्थिक, रोजगार, स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र में महिलाओं को सशक्त करने के बाद सरकार द्वारा नारियों को सशक्त बनाने की पृष्ठभूमि पर एक ध्वज की तरह स्थापित हुआ है, जो महिलाओं को राजनीतिक तौर पर भी सशक्त करने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है। 128वां संविधान संशोधन विधेयक अर्थात् नारी शक्ति वंदन अधिनियम के अस्तित्व में आने से लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान किया गया।

'नारी शक्ति वंदन बिल' अधिनियम के लागू होने पर लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में एक तिहाई सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित होंगी और सीधे चुनाव से भरी जाएंगी। साथ ही, आरक्षण राज्यसभा या राज्य विधान परिषदों पर लागू नहीं होगा, इसमें अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के लिए एक–तिहाई सीटें आरक्षित करना और कुल सीटों में से एक–तिहाई सामान्य श्रेणी के लिए आरक्षित करना शामिल होगा। लोकसभा में महिला सदस्यों की संख्या मौजूदा 82 महिला लोकसभा सदस्यों से बढ़कर 181 हो जाएगी यानी कुल 543 लोकसभा सीटों में से 181 सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित होंगी। यह अधिनियम बनने के बाद 15 साल तक लागू रहेगा, लेकिन इसकी अवधि बढ़ाई जा सकती है। महत्वपूर्ण बात ये है कि महिलाओं के लिए आरक्षित सीटों को प्रत्येक परिसीमन अभ्यास के बाद रोटेट किया जाएगा। तथा अधिनियम के प्रावधान 'संविधान (128 वां संशोधन) अधिनियम 2023 के शुरू होने के बाद ली गई पहली जनगणना के प्रासंगिक आंकड़े प्रकाशित होने' के बाद निर्वाचन क्षेत्रों के परिसीमन या पुनर्निर्धारण के बाद लागू होंगे।

वर्तमान सरकार ने नये संसद भवन में नारी को अग्रणी मानकर उसकी सर्वश्रेष्ठ भूमिका को स्वीकार कर उसे स्वर्णिम उपहार दिया गया। जिस प्रकार एक परिवार में नवीन गृह में प्रवेश किया जाता है तो कन्या पूजन घट स्थापना के साथ गृह लक्ष्मी की पूजन की जाती है ठीक वैसे ही नवीन संसद का शुभारंभ करते समय यह अधिनियम लाकर नरेन्द्र मोदी सरकार ने यह संदेश दिया है कि नारी शक्ति वंदन अधिनियम लाने से संभवत यही भाव फलीभूत भी हो रहा है कि–

नारी अस्य समाजस्य कुशलवास्तुकारा अस्ति।।

अर्थात् नारी समाज की कुशल शिल्पकार है। इस 'नारी शक्ति वंदन बिल' को अधिनियम बनने के समय माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदीजी ने नारी शक्ति वंदन अधिनियम को देश के भाग्य को बदलने का काम करने वाला बताते हुए उसके पीछे के अपने अनुभव को मानते हुए यहां तक कहा कि इसके कारण मेरा विश्वास अनेक गुणा बढ़ गया है। नारी जब कोई ज़िम्मेदारी संभालती है तो संकल्प को सिद्धि तक ले जाने के लिए वो जी जान से जुट जाती है। इस कानून का सबसे बड़ा लाभ ये होगा कि ये कानून देश की नारीशक्ति में बहुत बड़ा विश्वास पैदा करेगा। देश के लिए काम करने का जज्बा, भारत को आगे बढ़ाने की जो शक्ति है, वो कई गुणा बढ़ जाएगी।

लेखिका राजनीति विज्ञान ऑनर्स छात्रा दौलत राम कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

ISSN No. 2581-3528

गुरु गोविंद सिंह शहीदी दिवस

गुरु गोविंद सिंह सिख पंथ के दसवें गुरु एवं खालसा पंथ के संस्थापक (1666–1708)

डॉ. शिवा शर्मा

सवा लाख से एक लड़ाऊं,
चिड़ियन ते मैं बाज तुड़ाऊं,
तैबे गुरु गोविंद सिंह नाम कहाऊं

गुरु गोबिन्द सिंह (जन्मः पौष शुक्ल सप्तमी संवत् 1723 विक्रमी तदनुसार 22 दिसम्बर 1666 – 7 अक्टूबर 1708) सिखों के दसवें और अंतिम गुरु थे। श्री गुरू तेग बहादुर जी के बलिदान के उपरान्त 11 नवम्बर सन् 1675 को 10 वें गुरू बने। आप एक महान योद्धा, चिन्तक, कवि, भक्त एवं आध्यात्मिक नेता थे। सन् 1699 में बैसाखी के दिन उन्होंने खालसा पंथ (पन्थ) की स्थापना की जो सिखों के इतिहास का सबसे महत्वपूर्ण दिन माना जाता है।

गुरु गोविंद सिंह जी कहते थे कि युद्ध की जीत सैनिकों की संख्या पर निर्भर नहीं होना चाहिए, बल्कि वह तो उनके हौसले एवं दृढ़ इच्छाशक्ति पर निर्भर करती है। जो सच्चे उसूलों के लिए लड़ता है, वह धर्म योद्धा होता है तथा ईश्वर उसे हमेशा विजयी बनाता है।

गुरु गोविंद सिंह जी के पिता का नाम गुरु तेग बहादुर, माता का नाम गूजरी था।

गुरु गोबिन्द सिंह ने पवित्र (ग्रन्थ) गुरु ग्रंथ साहिब को पूरा किया तथा उन्हें गुरु रूप में प्रतिष्ठित किया। बचित्तर नाटक उनकी आत्मकथा है। यही उनके जीवन के विषय में जानकारी का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत है। यह दसम ग्रन्थ का एक भाग है। दसम ग्रन्थ (ग्रन्थ), गुरु गोबिन्द सिंह की कृतियों के संकलन का नाम है।

उन्होंने अन्याय, अत्याचार और पापों को खत्म करने के लिए और धर्म की रक्षा के लिए मुगलों के साथ 14 युद्ध लड़े। धर्म की रक्षा के लिए समस्त परिवार का बलिदान किया, जिसके लिए उन्हें 'सरबंसदानी' (पूरे परिवार का दानी) भी कहा जाता है। इसके अतिरिक्त जनसाधारण में वे कलगीधर, दशमेश, बाजांवाले, आदि कई नाम, उपनाम व उपाधियों से भी जाने जाते हैं।

गुरु गोबिंद सिंह ने कहा कि उनकी चिता को आग लगाने के बाद कोई भी अंगीठा साहिब को नहीं खोलेगा और ना ही उनकी मृत्यु के बाद किसी भी तरह की समाधि बनाई जाएगी। गुरु जी अपनी चिता के पास गए। इस दौरान लोग बुरी तरह रो रहे थे। आग की ऊंची-ऊंची लपटों के बीच गुरु जी अचानक अपने घोड़े के साथ गायब हो गए।

गुरु गोविंद सिंह जी सिखों के दसवें गुरु हैं। गुरु नानक देव की ज्योति इनमें प्रकाशित हुई, इसलिए इन्हें दसवीं ज्योति भी कहा जाता है।

सिखों के दसवें और अंतिम गुरु, गुरु गोविंद सिंह जी ऐसे वीर संत थे, जिनकी मिसाल दुनिया के इतिहास में कम ही मिलती है। उन्होंने मुगलों के जुल्म के सामने कभी भी घुटने नहीं टेके और खालसा पंथ की स्थापना की। 1708 में 7 अक्टूबर को वे मुगलों के साथ लड़ाई में शहीद हुए वाहे गुरु जी का खालसा, वाहे गुरु जी की फतेह जैसे वाक्य गुरु गोविंद सिंह की वीरता को बयां करते हैं। 15वीं सदी में गुरु नानक ने सिख पंथ की स्थापना की। गोविंद सिंह जी के पिता गुरु तेग बहादुर भी इस पंथ के गुरु थे।

गुरु गोविंद सिंह ने 1699 में खालसा पंथ की स्थापना की थी। आनंदपुर साहिब में वैशाखी के अवसर पर एक धर्मसभा के दौरान उन्होंने पंच प्यारों को चुना। उनके ही निर्देश पर सिखों के लिए खालसा पंथ के प्रतीक के तौर पर 5 ककार यानी केश, कंघा, कृपाण, कच्छ और कड़ा अनिवार्य हुआ।

गुरु गोबिंद सिंह ने 1708 में 7 अक्टूबर को महाराष्ट्र के नांदेड़ में स्थित श्री हुजूर साहिब में अपने प्राणों का त्याग किया था। तभी से इस दिन को शहीदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। हालांकि, उनके अंतिम संस्कार के बारे में बहुत सी अनोखी बातें कही जाती हैं। कहा जाता है कि गुरु गोबिंद सिंह जी की अंत्येष्टि चिता का निर्माण एक झोंपड़ी के रूप में किया गया था और गुरुजी अपने नीले घोड़े पर सवार होकर अंतिम संस्कार की चिता पर आए थे।

किसी भी दाह संस्कार के बाद, शरीर के कुछ अवशेष जरूर रह जाते हैं लेकिन गुरु गोबिंद सिंह जी के मामले में ऐसा नहीं था। कहा जाता है कि उनकी चिता से उनके या उनके घोड़े की कोई राख तक नहीं मिली। उनकी अंत्येष्टि में ऐसा कुछ भी नहीं मिला जिससे कहा जा सके कि यहां पर किसी शरीर का अंतिम संस्कार भी हुआ था।

एक हमले में गंभीर रूप से घायल गुरु गोबिंद सिंह जी के ठीक होने की खबर सुनकर सरहिंद का नवाब वजीर

ISSN No. 2581-3528

खान चिंतित हो गया। वजीर खान गुरु गोबिंद की राजा से बढ़ती करीबी को देखकर जलता था। उसने अपने दो आदमियों को गुरु की हत्या का आदेश देकर भेजा। जमशेद खान और वासिल बेग नाम के पठान गुरू की सेना में चुपके से शामिल हो गए। गुरु गोबिंद सिंह जब अपने कक्ष में आराम कर रहे थे तभी इनमें से एक पठान ने गुरू के दिल के नीचे बाईं ओर छुरा घोंप दिया। इससे पहले कि वह दूसरा हमला करता, गुरु गोबिंद सिंह ने उस पर कृपाण से वार कर दिया और उन्हें मार गिराया।

इस हमले में गुरु साहिब को गहरी चोट लगी थी लेकिन दरबार के यूरोपीय चिकित्सकों की मदद से वो जल्दी ठीक होने लगे। कुछ दिनों बाद हैदराबाद से कुछ कारीगर गुरु साहिब के पास आए और उन्हें शस्त्र भेंट किए। गुरु ने बदले में उन्हें कई ऐसे धनुष दिए जिन्हें चलाना बहुत कठिन था। किसी ने गुरू से इसे चलाने का तरीका पूछा। गुरु ने उसकी इच्छा पूरी करने के लिए जैसे ही धनुष को खींचा, उनका घाव फिर उभर गया और तेजी से खून बहने लगा।

गुरु गोबिंद सिंह का फिर से इलाज किया गया लेकिन गुरु को इस बात का आभास हो गया था कि स्वर्ग से उनके पिता का बुलावा आ चुका है। उन्होंने अपने प्रस्थान के लिए संगत तैयार किया, तत्काल मुख्य सेवादारों को निर्देश दिए गए और उन्होंने अपना आखिरी संदेश खालसा की सभा को दिया। इसके बाद उन्होंने ग्रंथ साहिब खोला और 'वाहेगुरु जी की खालसा, वाहेगुरू जी की फतेह' कहते हुए इसकी परिक्रमा की।

गुरु गोंबिंद ने कहा, 'जो मुझसे मिलने की इच्छा रखते हैं, वो मुझे भजन–कीर्तन में खोजें।' इसके बाद उन्होंने अपना लिखा भजन गाया। उन्होंने सभी सिखों से गुरु ग्रंथ साहिब को अपना गुरू मानने को कहा। उन्होंने कहा कि जो लोग भगवान से मिलना चाहते हैं, वे उन्हें अपने भजन में पा सकते हैं। खालसा का शासन होगा और इसके विरोधियों के लिए कोई जगह नहीं होगी। अलग हो चुके लोग एकजुट होंगे और सभी अनुयायियों को बचाया जाएगा।

उस दिन गुरुगाड़ी लंगर को कहीं और स्थानांतरित किया गया था। इसमें विभिन्न प्रकार के भोजन परोसे गए। इसके बाद गुरु ने खुद अपनी चिता की तैयारी की। इसके चारों तरफ दीवार बनाई गई। गुरु गोबिंद सिंह ने कहा कि उनकी चिता को आग लगाने के बाद कोई भी अंगीठा साहिब को नहीं खोलेगा और ना ही उनकी मृत्यु के बाद किसी भी तरह की समाधि बनाई जाएगी। गुरु जी अपनी चिता के पास गए। इस दौरान लोग बुरी तरह रो रहे थे। आग की ऊंची–ऊंची लपटों के बीच गुरु जी अचानक अपने घोड़े के साथ गायब हो गए।

इस बीच, भाई संगत सिंह उस समय हजूर साहिब आ रहे थे। उन्होंने लोगों को बताया कि वह नांदेड़ के पास चील और घोड़े के साथ गुरु साहिब से रास्ते में मिले थे। गुरु ने एक सच्चे सिख होने के लिए उनकी सराहना की और प्रसाद के तौर पर कराह भी दिया। इसके बाद भाई दया सिंह ने चिता जलने के थोड़ी देर बाद अंगीठा साहिब का दरवाजा खोल दिया और जब वो अंदर गए तो एक छोटे से कृपाण के अलावा वहां कुछ भी नहीं था।

(लेखिका झम्मन लाल पी.जी. कालेज हसनपुर में (अंग्रेजी विभाग) में असिस्टेंट प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हैं)

ISSN No. 2581-3528

भारत का सांस्कृतिक वैभव एक नया आकार ले रहा है

प्रहलाद सबनानी

भारतीय सनातन संस्कृति, सभ्यता और परम्पराएं विश्व में सबसे अधिक प्राचीन मानी जाती हैं। भारतीय संस्कृति को विश्व की अन्य संस्कृतियों की जननी भी माना गया है। भारत की संस्कृति और सभ्यता आदि काल से ही अपने परम्परागत अस्तित्व के साथ अजर अमर बनी हुई है। भारत में गीत संगीत, नाटक परम्परा, लोक परम्परा, धार्मिक संस्कार, अनुष्ठान, चित्रकारी और लेखन के क्षेत्र में एक बहुत बड़ा संग्रह मौजूद है जो मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में जाना जाता है। इसे संजोने, संवारने और निखारने का महती प्रयास हाल ही के समय में बहुत मजबूती के साथ किया जा रहा है।

विशेष रूप से पिछले एक दशक में भारत की संस्कृति के प्रचार प्रसार के लिए निरंतर प्रयास किए गए हैं जिससे न केवल विश्व के लोगों को देश के माटी की सौंधी खुशबू मिली है बल्कि पूरी दुनिया भारतीय संस्कृति को जानने एवं समझने का प्रयास भी कर रही है। भारत का अतीत वर्तमान से भी सुंदर एवं प्रभावशाली रहा है। कोणार्क का सूर्य मंदिर, मदुराई का मीनाक्षी मंदिर, एलोरा का कैलाश मंदिर, कांचीपुरम में वरद राजा मंदिर, मुंडेरा में सूर्या मंदिर के अलौकिक रूप एवं अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण, काशी में बाबा विश्वनाथ धाम कारिडोर, उज्जैन में महालोक कारिडोर, केदारनाथ धाम का पुनर्विकास, पवित्र डेरा बाबा नानिक करतारपुर साहिब कारिडोर के रूप में भारत के सांस्कृतिक वैभव को एक नया आयाम दे रहे हैं। इसके अतिरिक्त रामायण सर्किट, बौध सर्किट, तीर्थंकर सर्किट समेत अन्य पर्यटन सर्किट भी विकसित किए जा रहे हैं।

भारत में 40 विश्व धरोहर स्थल हैं, जिनमें से 32 सांस्कृतिक स्थल, 7 प्राकृतिक स्थल और 1 मिश्रित स्थल है। इसके अलावा सरकार की देखरेख में शामिल लगभग 3000 स्मारकों को मोमेंट्स ओफ नैशनल इम्पॉर्टन्स घोषित किया गया है। भारत के संस्कृति मंत्रालय का मिशन कला और संस्कृति के सभी रूपों का परीक्षण, संवर्धन, प्रचार और प्रसार करना है। संस्कृति मंत्रालय के कार्य हैं – ऐतिहासिक स्थलों, प्राचीन स्मारकों का संरक्षण, पुस्तकालयों का प्रबंधन और प्रशासन, साहित्यिक, दृश्य और मंच कलाओं का संवर्धन, महत्वपूर्ण राष्ट्रीय विभूतियों और घटनाओं का शताब्दी वर्ष आयोजन, बौद्ध और तिब्बती अध्ययन संस्थानों का संवर्धन, कला और संस्कृति के क्षेत्र के लिए निजी भागीदारी करना, दूसरे देशों के साथ सांस्कृतिक करार करना, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सांस्कृतिक आदान–प्रदान करना, सांस्कृतिक जागरूकता पैदा करना, उक्त समस्त कार्यों का बखूबी निर्वहन संस्कृति मंत्रालय कर रहा है। पिछले एक दशक के दौरान भारत की सांस्कृतिक विरासत के क्षेत्र में कई मील के पत्थर जोड़े गए हैं।

भारत के सांस्कृतिक मंत्रालय ने कई नवाचार प्रारम्भ किए हैं। जैसे, ई–टिकटिंग की सुविधा, भारत अवश्य देखें स्मारक और पुरातत्व स्थल पोर्टल प्रारम्भ करना, सभी केंद्रीय संरक्षित स्मारकों में फोटोग्राफी की अनुमति देना, इसरो के सहयोग से एएसआई स्मारकों की सेटेलाइट मैपिंग करना, विदेशों में गई भारतीय मूर्तियों की वापसी के प्रयास करना, स्मारक और पुरातत्व स्थल पोलिथिन मुक्त घोषित करना, पर्यटकों के लिए एक कैशलेस टूल प्रारम्भ करना, विदेशों में भारतीय उत्सव और त्यौहारों की धूम पैदा करना, देश में म्यूजियम कल्चर का तेजी से विकास करना, आदि। शीघ्र ही युगे–यूगीन राष्ट्रीय संग्रहालय भी देश को समर्पित होने जा रहा है जो देश का सबसे बड़ा म्यूजियम होगा।

देश को राजनैतिक स्वतंत्रता प्राप्त हुए 7 दशक से अधिक का समय हो चुका है और हमने अभी हाल ही में आजादी के 75 वर्षों के बाद अमृत काल मानाया है।

ISSN No. 2581-3528

आजादी के अमृत महोत्सव की आधिकारिक यात्रा 12 मार्च 2021 को प्रारम्भ हुई। जिसे हमारी आजादी की 75 वर्षगांठ के लिए 75 सप्ताह की गिनती शुरू की थी जो उत्सवों के साथ निरंतर गतिमान रही। इस बीच उत्सवों की लम्बी शृंखला चली और 15 अगस्त 2023 तक यह यात्रा निर्बाध गति से चलती रही। आजादी के अमृत महोत्सव के दौरान 166,000 से अधिक कार्यक्रम देश और दुनिया में आयोजित किए गए। जिसमें हर घर तिरंगा, वन्दे भारतम, कलांजलि जैसे कई बड़े कार्यक्रम भी शामिल रहे।

अमृत महोत्सव के पांच स्तम्भ हैं – स्वतंत्रता संग्राम–75, विचार–75, समाधान–75, कार्य–75, उपलब्धियां–75। जनभागीदारी से मनाया जा रहा आजादी का अमृत महोत्सव, देश की इन 75 वर्षों की उपलब्धियों को पूरी दुनिया के सामने रखने का एक प्रयास है और इसके साथ ही अगले 25 वर्षों के लिए संकल्पों की रूपरेखा भी रखी जा रही है।

भारत की सांस्कृतिक विरासत का पर्यटन एक बेहतरीन रंग बनकर उभरता है। भारत विविधताओं का देश है। यह एक बहुसांस्कृतिक और विविधताओं का राष्ट्र है। यहां की संस्कृति, सभ्यता, विरासत, त्यौहार, उत्सव, उपासना, व्यंजन, बोली, भाषा, आदि भिन्न भिन्न होते हुए भी भारत देश एक है, अटूट है। यह विशेषताएं न केवल भारत को विशेष पहिचान दिलाती हैं बल्कि पूरी दुनिया के सामने भारत को खास भी बनाती है।

कोरोना महामारी ने पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था को घुटने टेकने को मजबूर कर दिया था और कोरोना के दंश ने पर्यटन की रफ्तार को कुंद कर दिया था। भारत सरकार ने चुनौतियों में अवसरों को तलाशा और पर्यटन उद्योग में नई जान फूंक दी है जिससे अब भारत का पर्यटन उद्योग नई ऊंचाईयों को छू रहा है। भारत में पर्यटन पहिले से काफी अलग नजर आ रहा है। पर्यटन को नई ऊंचाईयां देने के लिए अथक प्रयास किए गए हैं। पर्यटन स्थलों को विकसित किया गया है, सुविधाओं का विस्तार किया गया है, परिवहन को सुगम बनाया गया है, आधारभूत ढांचे को विकसित किया गया है। साथ ही कई अन्य प्रयास भी किए गए हैं। अतुल्य भारत, वीजा ओन अराइवल, प्रसाद योजना, देखो अपना देश, एक भारत श्रेष्ठ भारत, हरित पर्यटन मिशन, स्वदेश दर्शन योजना, स्वच्छता अभियान, स्वच्छ पर्यटन ऐप, अडाप्ट ए हेरिटिज, रामायण सर्किट, सूफी सर्किट, बुदेलखंड सर्किट, धर्मशाला घोषणा पत्र (2022) जैसी कई नई योजनाएं प्रारम्भ की गई हैं।

केंद्र सरकार ने ग्रीन और डिजिटल पर्यटन पर ध्यान केंद्रित करते हुए राष्ट्रीय पर्यटन नीति का मसौदा तैयार किया है। इसमें विकास भी विरासत भी की तर्ज पर देश में पर्यटन क्षेत्र को विकसित किया जा रहा है। राष्ट्रीय पर्यटन नीति में पर्यटन को उद्योग का दर्जा दिया गया है। जिसमें हरित पर्यटन और डिजिटल पर्यटन पर विशेष जोर दिया जा रहा है। आतिथ्य क्षेत्र को और कुशल बनाया जा रहा है। इसके साथ ही सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों को बढ़ावा दिया जा रहा है। ईज ऑफ टूरिजम को बढ़ावा देते हुए पर्यटन के लिए टैक्स ढांचे में राहत प्रदान किए जाने के प्रयास हो रहे हैं। पर्यटन विकास के लिए देश में करोड़ों रुपए खर्च किए जा रहे हैं। इस वर्ष इस मद पर 50,000 करोड़ रुपए का बजट निर्धारित किया गया है। देश में आने वाले पहले 5 लाख पर्यटकों को निःशुल्क वीजा प्रदान किया जाएगा। पर्यटन को पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप मॉडल पर विकसित किए जाने के प्रयास किए जा रहे हैं। ई–वीजा सेवा सुविधा की शुरुआत की गई है। वर्ष 2030 तक भारत को विश्व के 5 शीर्ष देशों में स्थान दिलाने के प्रयास हो रहे हैं। टिकाऊ, जिम्मेदार और सामवेशी पर्यटन को बढ़ावा दिया जा रहा है।

भारत में 40 विश्व धरोहर स्थल हैं, जिनमें से ३२ सांस्कृतिक स्थल, 7 प्राकृतिक स्थल और 1 मिश्रित स्थल है। इसके अलावा सरकार की देखरेख में शामिल लगभग 3000 स्मारकों को मोमेंट्स ओफ नैशनल इम्पॉर्टन्स घोषित किया गया है। भारत के संस्कृति मंत्रालय का मिशन कला और संस्कृति के सभी रूपों का परीक्षण, संवर्धन, प्रचार और प्रसार करना है।

पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से भारत ने वर्ष 2023 को विजिट भारत वर्ष घोषित किया गया है। इसी संदर्भ में विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए बहुत प्रयास मौजूदा सरकार ने किए हैं। इसका मुख्य उद्देश्य है इन बाउंड पर्यटन के लक्ष्य को प्राप्त करना है। हाल ही के वर्षों में इन बाउंड पर्यटन में उल्लेखनीय सुधार दिख रहा है। भारतीय पर्यटन अगले कुछ वर्षों में सबसे तेजी से बढ़ते देशों में शामिल होने जा रहा है। विश्व आर्थिक मंच के अनुसार पर्यटन से जुड़े स्पर्धात्मक सूचकांक में भारत ने पिछले 4 वर्षों में 25 स्थानों की छलांग लगाई है। वर्ल्ड इकानामिक फोरम ने यात्रा और पर्यटन विकास 2022 की सूची में 117 देशों के बीच भारत को 54वां स्थान दिया गया है। भारत दक्षिण एशिया में शीर्ष प्रदर्शन करने वाला देश बन चुका है। पर्यटन क्षेत्र आज भारत के लिए प्रत्यक्ष विदेशी निवेश भी आकर्षित कर रहा है। भारत में पर्यटन के क्षेत्र में देशी एवं विदेशी यात्रियों की संख्या में पर्याप्त इजाफा हुआ है। भारत में पर्यटन उद्योग एक महत्वपूर्ण रोजगार सृजन क्षेत्र होने के साथ देश के लिए विदेशी मुद्रा का एक मुख्य स्त्रोत भी है। 5.30 करोड़ रोजगार के अवसर पर्यटन से जुड़े उद्योग में निर्मित हुए हैं। अगले 5 वर्षों में 14 करोड़ रोजगार के अवसर निर्मित करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

(लेखक भारतीय स्टेट बैंक क उप महाप्रबंधक पद से सेवा निवृत्त हैं)

ISSN No. 2581-3528

सनातन धर्म मानवता और विज्ञान की नींव

पंकज जगन्नाथ जयस्वाल

कुछ राजनेता और बुद्धिजीवी सनातन धर्म पर लगातार हमले कर रहे हैं। लेख आपको यह एहसास दिलाएगा कि सनातन धर्म लंबे समय से मानव आदर्शों, विज्ञान और प्रौद्योगिकी और मानवता की नींव रहा है। सनातन धर्म का मूल वह जीवन है जो हर कोई पृथ्वी पर जीना चाहता है, उस तरह का समाज जो हर कोई चाहता है, राष्ट्र का विकास और 'एक विश्व, एक परिवार' जो हर कोई चाहता है। तो फिर सवाल यह उठता है कि कुछ राजनेता, राजनीतिक दल और विचारक इसे क्यों खत्म करना चाहते हैं जो एक महान व्यक्ति, एक बेहतर और अधिक शांतिपूर्ण समुदाय और राष्ट्र तथा सहयोग, आपसी समझ और प्यार से भरी दुनिया विकसित करने का मार्ग है ? सनातन धर्म पर इस तरह के हमले को समाज कैसे बर्दाश्त कर सकता है और इन ताकतों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई क्यों नहीं की जानी चाहिए?

सनातन धर्म एक अनुभूति है जिसका मतलब जो 'शाश्वत' है! जिसका सभी लोगों को, वर्ग, जाति या संप्रदाय की परवाह किए बिना पालन करना चाहिए। धर्म के अनुसार दायित्व अलग–अलग होते हैं, लेकिन सामान्य तौर पर, सनातन धर्म में ईमानदारी, जीवित प्राणियों को नुकसान पहुंचाने से बचना, पवित्रता, परोपकार, दया, धैर्य, सहनशीलता, आत्म–संयम, उदारता और तपस्या जैसे मूल्य शामिल हैं। कोई इन पहलुओं को नष्ट करने पर कैसे विचार कर सकता है?

यह सिद्धांतों का समूह है जिसे धर्म के नाम से जाना जाता है जिसे ईश्वर सृष्टि के प्रत्येक चक्र में आरंभ करता है। हालाँकि, इन धार्मिक विचारों को समझने के लिए आपको किसी पवित्र पुस्तक की आवश्यकता नहीं है। इसी में इसकी भव्यता निहित है। यह निर्दोष आचरण वाले कई महान ऋषियों के सदियों के गहन आत्मनिरीक्षण का परिणाम है! यह वन–मैन शो नहीं है! यह एक शाश्वत नदी की तरह है जिसे लाखों स्वच्छ जल नालों ने बड़ा कर दिया है!

यह किसी को भी निराकार ब्रह्मा, साकार ब्रह्मा, अद्वैत सिद्धांत और आत्म–बोध, अन्य चीजों के मार्ग का अनुसरण करके अंतिम सत्य या अंतिम गंतव्य (मोक्ष) तक पहुंचने की अनुमति देता है। आपको किसी भी बात पर आंख मूंदकर विश्वास करने की जरूरत नहीं है। आप सवाल कर सकते हैं, जांच कर सकते हैं और विश्वास कर सकते हैं। वास्तव में, सनातन धर्म में प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

धर्म कई आवश्यक सिद्धांतों से बना है, जो सत्य, करुणा, स्वच्छता (शौच), और आत्म–नियंत्रण (तप) के चार मूलभूत सिद्धांतो से शुरू होता है। अन्य सिद्धांत इन चार आवश्यक सिद्धांतों के विस्तार हैं, जिनके बिना किसी भी धर्म का अस्तित्व नहीं हो सकता।

धर्म का अर्थ है धार्मिकता। शाश्वत धार्मिकता कैसे गिर सकती है? हम, अकर्मण्य मनुष्य, सनातन धर्म की वैज्ञानिक सुंदरता को समझने में असफल रहे हैं। यह सभी को स्वतंत्र रूप से विश्वास करने, सोचने और कार्य करने के अधिकार की गारंटी देता है। यह सभी को मुक्त करना चाहता है। यह ईश्वर के नाम पर मानवता को विभाजित नहीं करता है। यह धर्म परिवर्तन में विश्वास नहीं रखता। इसमें कहा भी कहा गया है कि यह एकमात्र सही उत्तर है और अन्य सभी गलत हैं। यह धार्मिक संघर्ष को बढ़ावा नहीं देता। यह अल्पसंख्यकों पर अत्याचार करने का आह्वान नहीं करता है। यह नास्तिकों को भी स्वीकार करता है। यह सभी देवताओं और सभी ईश्वरीय विचारों को स्वीकार करता है। यह

ISSN No. 2581-3528

विविधता में एकता की अवधारणा में विश्वास करता है। इसकी एक समावेशी संस्कृति है। यह आस्था और विज्ञान दोनों के अनुरूप है। यह सुधार और विकास के लिए सक्षम बनाता है। इसमें परम आध्यात्मिक ज्ञान है जो मनुष्यों को मुक्त करने में सक्षम है। यह सार्वभौमिक, मानवीय और आध्यात्मिक सिद्धांतों को बढ़ावा देने के लिए काम करता है। परिणामस्वरूप, यह मानवता के लिए सर्वोत्तम है।

सनातन धर्म पूरी तरह से आधुनिक विज्ञान के अनुरूप है : विज्ञान में सबसे बड़ी प्रगति ब्रिटेन के स्वर्णिम दिनों में हुई जब अंग्रेजों ने भारत पर कड़ा नियंत्रण कर रखा था। सच्चे वैदिक संस्करण का विश्लेषण और समझ उन पश्चिमी मस्तिष्कों द्वारा की गई थी जिनके पास बहुत कम योग्यता थी। परिणामस्वरूप, भारत के इस नए ज्ञान को पश्चिमी दुनिया की जरूरतों को पूरा करने के लिए उचित रूप से रूपांतरित और अनुकूलित किया गया। भारत की कई पुरानी पुस्तकों का अंग्रेजी, जर्मन और अन्य भाषाओं में अनुवाद किया गया और ब्रिटिश पुस्तकालयों में सावधानीपूर्वक संग्रहीत किया गया। वेदों ने ऊर्जा, तत्वों, सामग्रियों, शक्ति और उनके माप की इकाइयों के नाम और विवरण पेश किए—जो वेदों के पूर्ण ज्ञान के महासागर की तुलना में केवल हिमशैल के टिप हैं।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी की प्रगति मानव सभ्यता के विकास का प्राथमिक कारण रही है। प्राचीन काल से ही भारत ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी में योगदान दिया है। आज भी, जिसे हम 'पारंपरिक ज्ञान' कहते हैं, वह वैज्ञानिक प्रमाणों पर आधारित है। भारत की वैज्ञानिक खोज और विकास का इतिहास वैदिक काल तक फैला हुआ है। सनातन या हिंदू पूर्वजों और ऋषियों के पास न केवल कागज पर यह विशाल ज्ञान था, बल्कि उन्होंने उस समय की सर्वोत्तम प्रतिभाओं और डिजाइन का उपयोग करके कई अवधारणाओं को व्यावहारिक रूप से जमीन पर भी क्रियान्वित किया। हम मंदिरों, संरचनाओं, धातुकर्म, वास्तुशिल्प सुंदरता, गणितीय गणना, शल्य चिकित्सा पद्धतियों आदि का अवलोकन कर सकते हैं।

भारतीयों ने दुनिया भर में हजारों अविश्वसनीय वास्तुशिल्प रूप से आश्चर्यजनक मंदिर क्यों बनाए हैं? क्या वे वास्तव में इस पर अपना पैसा खर्च करने में सक्षम थे?

हाँ, उनकी सनातन हिंदू संस्कृति ने मानवता को समृद्ध और शांतिपूर्ण बनाने के लिए उन्हें ज्ञान, बुद्धि, कड़ी मेहनत, आध्यात्मिकता और, सबसे महत्वपूर्ण, जीवन के सभी क्षेत्रों में अनुसंधान प्रदान किया। हजारों वर्षों से, ज्ञान, विनिर्माण और व्यापार की उनकी इच्छा ने उन्हें दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था तक पहुंचाया। जर्मन दार्शनिक गॉटफ्रीड वॉन हर्डर के अनुसार, 'मानव जाति की उत्पत्ति का पता भारत में लगाया जा सकता है, जहां मानव मन को ज्ञान और सद्‌गुण का पहला आकार प्राप्त हुआ।'

हड़प्पा के गांवों की जटिल संरचना से लेकर दिल्ली में लौह स्तंभों की उपस्थिति तक, यह स्पष्ट है कि भारत की स्वदेशी तकनीक बहुत परिष्कृत थी। उनमें जल आपूर्ति, यातायात प्रवाह, प्राकृतिक एयर कंडीशनिंग, जटिल चिनाई और संरचनात्मक इंजीनियरिंग शामिल थे।

ISSN No. 2581-3528

सिंधु घाटी सभ्यता ने दुनिया के सबसे पुराने समाज की स्थापना की, जो नियोजित समुदायों, भूमिगत जल निकासी, नागरिक स्वच्छता, हाइड्रोलिक इंजीनियरिंग और एयर कंडीशनिंग वास्तुकला से परिपूर्ण था।

जर्मन भौतिक विज्ञानी वर्नर हाइजेनबर्ग ने एक बार कहा था... भारतीय वेद दर्शन के बारे में बातचीत के बाद, क्वांटम भौतिकी के कुछ विचार जो इतने पागल लग रहे थे, अचानक बहुत अधिक अर्थपूर्ण लगने लगे...

परमाणुओं, अणुओं और पदार्थ की अवधारणा वैदिक काल से चली आ रही है। इसके अलावा, खगोल विज्ञान और तत्वमीमांसा सभी वैदिक युग के प्राचीन सनातन साहित्य ऋग्वेद में विस्तृत हैं। प्रसिद्ध प्राचीन हिंदू खगोलशास्त्री ऋषि भास्कराचार्य के अनुसार, वस्तुएं पृथ्वी की आकर्षण शक्ति के कारण पृथ्वी पर गिरती हैं। आकर्षण के परिणामस्वरूप, पृथ्वी, ग्रह, नक्षत्र, चंद्रमा और सूर्य अपनी कक्षा में बने रहते हैं। लगभग 1200 साल बाद सर आइजैक न्यूटन ने इस घटना की फिर से खोज की और इसे गुरुत्वाकर्षण का नियम नाम दिया।

सनातन जीवन पद्धति ने पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में किस प्रकार सहायता की है?

सनातन धर्म अनादि (कोई शुरुआत नहीं) और पौरुषेय (कोई मानव प्रवर्तक नहीं) दोनों हैं। इसकी विशेषता ब्रह्मांडीय सत्य की खोज है, जैसे विज्ञान को भौतिक सत्य की खोज द्वारा परिभाषित किया गया है।

सनातन धर्म–केंद्रित जीवन जीने का सबसे बड़ा लाभ यह है कि इससे मानसिक स्पष्टता और फोकस में सुधार होता है। व्यक्ति अपने उद्देश्य और मूल्यों के साथ जुड़कर अधिक मानसिक स्पष्टता, मजबूत रिश्ते और बेहतर शारीरिक स्वास्थ्य का अनुभव कर सकते हैं, जिससे वे अधिक पूर्ण और शांत जीवन जी सकते हैं। चाहे आप अपने जीवन में

गहरा उद्देश्य ढूंढना चाहते हों या अधिक प्रामाणिक तरीके से जीना चाहते हों, धर्म निर्णय लेने और दैनिक जीवन के उतार–चढ़ाव से निपटने के लिए एक लाभकारी ढांचा प्रदान कर सकता है। सनातन के अनुसार, व्यक्तिगत विकास और आत्म–विकास के अहसास लिए धर्म आवश्यक है। आप अपने धर्म को समझकर और उसे साकार करने के लिए लगातार प्रयास करके जीवन में उद्देश्य और दिशा की भावना प्राप्त कर सकते हैं। आप ऐसे तरीके से भी जी सकते हैं जो आपके प्रति सच्चा हो और आपके आंतरिक मूल्यों और विश्वासों के अनुरूप हो। आप अपने धर्म की बेहतर समझ प्राप्त कर सकते हैं और इसे धैर्य और दृढ़ संकल्प के साथ सार्थक और संतुष्टिदायक तरीके से अपने दैनिक जीवन में शामिल कर सकते हैं। धर्म में सही काम करना, निःस्वार्थ होना और दूसरों की सेवा करने के लिए प्रतिबद्ध होना शामिल है। इसके कई रूप हो सकते हैं, जैसे किसी व्यक्ति की पेशेवर जिम्मेदारियों को ईमानदारी के साथ निभाना, समुदाय में स्वयंसेवा करना, या दूसरों के साथ हमेशा प्यार और सम्मान के साथ व्यवहार करना।

सनातन धर्म को दैनिक जीवन में शामिल करने के लिए आत्म–जागरूकता के साथ–साथ केंद्रित प्रयास की भी आवश्यकता है। इसमें जानबूझकर निर्णय लेना शामिल है जो हमारे मूल्यों और नैतिक आदर्शों के अनुरूप हैं, साथ ही हमारे कार्यों और कारणों पर लगातार प्रतिबिंबित करते हैं। इससे हमें अपने जीवन में उद्देश्य और पूर्ति की भावना विकसित करने में मदद मिल सकती है।

सनातन धर्म को सुरक्षा की आवश्यकता नहीं है। इसे स्फूर्तिवान बनाया जाना चाहिए; हमारे जीने के तरीके के अनुसार यह हम सभी में जीवित रहना चाहिए। यदि हम ऐसा नहीं करते हैं तो इसकी सुरक्षा करना एक व्यक्ति का काम बन जाएगा, जो की असंभव है। सनातन धर्म के लिए यह उत्तम समय है। यह एकमात्र संस्कृति है जिसने मानव तंत्र का इतनी गहनता से अध्ययन किया है कि अगर इसे सही ढंग से दुनिया के सामने प्रस्तुत किया जाए, तो यह दुनिया का भविष्य होगा। क्योंकि यह कोई विश्वास प्रणाली नहीं है, यही एकमात्र चीज़ है जो एक विकसित बुद्धि को आकर्षित करेगी। यह खुशी, जीवन और मुक्ति का विज्ञान और तकनीक है। परिणामस्वरूप, सनातन धर्म अतीत की चीज़ नहीं रह गया है। यह हमारा रिवाज नहीं है, यह हमारा मिशन है!

(लेखक ब्लॉगर एवं शिक्षाविद हैं)

ISSN No. 2581-3528

हर खेल के दाता हम

पूरी दुनिया मे खेलों का अलग ही महत्वपूर्ण स्थान है। चीन में अभी एशिया की प्रतियोगिता चल रही है। विश्व में जितनी भी खेल प्रतियोगिता होती हैं। कुछ खेलों को छोड़ दें तो अधिकतम खेल प्रतियोगिताओं में विदेशियों का ही वर्चस्व रहता है। कबड्डी, क्रिकेट, हाकी, भाला फैंक, कुश्ती आदि खेलों में हम मजबूत स्थिति में दिखाई देते हैं। बाकी अधिकतम खेलों में हमारी स्थिति हमारे देश के नाम के अनुरूप नही रहती। अभी चीन में चल रहे ऐशियन गेम्स में हमसे बहुत छोटे-छोटे देश भी हमसे बहुत आगे रहते हैं। ऐशियन गेम्स में हम अभी छटे स्थान पर हैं। कोरिया, जापान, हांगकांग उज्बेकिस्तान जैसे देश हमसे बहुत आगे हैं। खेलों में हमारे पिछड़ने का कारण केवल एक ही है हम अपनी प्राचीनता व गौरवशाली इतिहास को भूल गए हैं। ध्यान देंगे तो पता चलेगा कि विश्व के अधिकतम खेलों का जन्म विदेश में ही हुआ है। हमको भी यही पता है। हमको पढ़ाया भी यही जाता है। परंतु वास्तविकता में शायद ऐसा नही है। विश्व के सभी प्रमुख खेलों की शुरुआत भारत से ही हुई है। कबड्डी, हॉकी, शतरंज की शुरुआत भारत में हुई ऐसा बताया जाता है परन्तु अन्य खेलों के इतिहास में जायेंगे तो स्पष्ट होगा कि सभी खेल हमने ही बनाये हैं। हमको बताया गया कि कुश्ती फ्रांस का खेल था वहां से दुनिया में आया। जबकि भारत के इतिहास को देखेंगे तो स्पष्ट होगा कि भीम,जरासन्द, हनुमान जी,आदि सभी पहलवान ही थे। बिना शस्त्र से लड़ते थे। उस समय इसे मल्लयुद्ध कहा जाता था, क्रिकेट का जन्मदाता इंग्लैंड को बताते है लेकिन महाभारत काल में श्रीकृष्ण जमुना के किनारे अपने मित्रों के साथ इसी खेल को खेल रहे थे। उनके मित्र ने श्रीकृष्ण को गेंद फेंकी और उन्होंने उसको जानबूझकर उस समय लकड़ी के बने बल्ले से जमुना में मारकर गिरा दिया। फिर कालिया नाग का विषय हम सबको पता ही है। फुटबॉल भी इंग्लैंड का बताते हैं परन्तु ध्यान देंगे तो पता चलेगा कि कौरव और पांडव गेंद को पैर से मारकर खेल रहे थे जो अर्जुन के पैर से लगकर कुएं में गिर गई थी जिसको अर्जुन ने तीरों की लाइन बनाकर बाहर निकाला था, तैराकी, घुड़सवारी,भाला फैंक,आदि खेलों को भी विदेशी ही बताया जाता है जबकि मत्स्य रूप भगवान ने हमारे यही जन्म लिया और दुर्योधन अपनी जान बचाने के लिए जल में ही छिप गया था। जल में लंबे समय तक रहने की कला हमारे ही पास थी,भाला फैंकने में महाराणा प्रताप का कोई सानी नही था। एक और प्रमुख खेल जो सभी को प्रभावित व आकर्षित करता है वो है,बिना शस्त्र के लड़ना। जिसको कई देशों में अलग अलग नाम से जाना जाता है। चीन में जिसे मार्शल आर्ट,जापान में जूडो और कोरिया में जिसे कुंग फू कहते हैं। इनमें कंही-कंही थोड़ी भिन्नता दिखाई देती है परन्तु है एक ही। बिना शस्त्र के लड़ने की इस कला को भारत में नियुद्ध कहते हैं यही इसका सबसे प्राचीन नाम है। भारत में दक्षिण में पल्लव राज्य के राजा सुगन्ध के तीसरे पुत्र बोधिधर्म भगवान बुद्ध के सन्देश को लेकर विदेशों में गए। वो ही अपने साथ भारत के नियुद्ध को लेकर गए। चीन में इनको दार्मो, जापान में इनको दारुमा कहा जाता है। इतना सब कुछ होने के बाद भी हम अधिकतम खेलो में पीछे हैं इसके दो मुख्य कारण नजर आते हैं। एक तो आजादी के बाद हमारी सरकार द्वारा कोई विशेष सहयोग व प्रोत्साहन इसके लिए नही किया गया। दूसरा हमको नही पता है कि ये सब खेल हमारे ही बनाये गए हैं। भारत के युवाओं को इन खेलों को अपना मानकर कड़ी मेहनत करनी होगी। जिससे हम खेलों में भी भारत के नाम को आगे बढ़ा सकें। क्रिकेट, भाला फैंक, हॉकी, शतरंज में हम अभी भी आगे हैं। क्रिकेट के तीनों प्रारूपों में हम विश्व के प्रथम देश हैं। अन्य खेलों में भी हमारी स्थिति मजबूत बने उसके लिए अपने गौरवशाली खेल के इतिहास को याद करना चाहिए।

(ललित शंकर गाजियाबाद)

ISSN No. 2581-3528

सपनों के बोझ तले दब रही युवा पीढ़ी

सोनम लववंशी

कोटा, जो वर्तमान दौर की शिक्षा नगरी कहलाती है। अब उसका नाम जेहन में आते ही रूह कांप जाती है। हृदय द्रवित हो उठता है, कई बार तो सांसें थम जाती हैं, क्योंकि जो शहर सपनों को ऊँची उड़ान मुहैया करा रहा था। उसी शहर से अब मौत की खबरें आ रही हैं। मौत भी ऐसी–वैसी नहीं! सपने बच्चों के जीवन से इतने बड़े हो जा रहे हैं कि उसके बोझ तले जीवन और बच्चें की सांसें कमजोर पड़ती जा रही हैं। इस साल का अगस्त महीना बीते–बीते इस शहर से 24 बच्चों की जान देने की खबरें सुर्खियां बन चुकी हैं, लेकिन प्रेशर कुकर बनें शहर से मौत की खबरें आने का सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा है। अब जरा विचार कीजिए कि अगर बच्चें अपना जीवन दांव पर लगाने को मजबूर हो रहे हैं, तो फिर ऐसी शिक्षा किस काम की? शिक्षा व्यक्तित्व निर्माण में सहायक होनी चाहिए, लेकिन आज की गलाकाट प्रतिस्पर्धा के दौर में शिक्षा के मायने बदल गए हैं! शिक्षा व्यवसाय और अर्थोपार्जन का वह जरिया बन गई है, जिसके सामने नैतिकता और मूल्यों का ह्रास हो चला है। कोटा में प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे बच्चों की मौत कई सवाल खड़े करती है समाज और रहनुमाई व्यवस्था के सामने, लेकिन उन सवालों के प्रति अपनी जवाबदेही से समाज और व्यवस्था दोनों दूर भाग रही है। यही वजह है कि साल दर साल बच्चें पढ़ाई के बोझ तले दबकर अपनी जीवनलीला समाप्त कर रहे हैं।

दुर्भाग्य देखिए हमारे समाज का कि वो हर बच्चें को शीर्ष पर देखना चाहता है, लेकिन वास्तविकता तो यही है कि शीर्ष पर सिर्फ़ एक व्यक्ति ही काबिज़ हो सकता है। फ़िर ऐसी आशा, अपेक्षा और आस आख़िर किस काम की? हर बच्चा अपने आप में यूनिक होता है। ईश्वर द्वारा हर छात्र के भीतर कोई न कोई ऐसा गुण अवश्य होता है, जो उसे औरों से अलग बनाता है, लेकिन भेड़चाल की ऐसी परिपाटी हमारे समाज में अनवरत जारी है। जिसके नकारात्मक प्रभाव हम सभी के सामने हैं। इसके बावजूद हम सब सीखने को तैयार नहीं! एक बच्चा भी अस्वाभाविक मौत मरता है, तो यह राष्ट्र की क्षति है। लेकिन न रहनुमाई व्यवस्था को इस बात की फ़िक्र है और न ही पालकों को। परिजन की ख्वाहिश सिर्फ़ इतनी होती है कि फ़लाने की लड़की या लड़का अगर डॉक्टर– इंजीनियर बन सकता है, तो हमारा सिक्का खोटा क्यों रहें? भले ही फिर बच्चें की रुचि खेल या किसी अन्य गतिविधियों में क्यों न हो?

कोटा जिसे एजुकेशन हब कहा जाता है। वहां हो रहे बच्चों की मौत के आंकड़े को देखेंगे तो साधारणतया पाएंगे कि बच्चें मानसिक तनाव, सामाजिक प्रेशर और आर्थिक मजबूरी की वजह से आत्महत्या को गले लगाने को मजबूर हैं। स्वाभाविक सी बात है अगर कोई दूर–दराज का ग़रीब या मध्यम वर्ग का लड़का कोटा जैसे शहर में पढ़ने के लिए जाता है, तो उसे कई स्तर पर समस्याओं से दो–चार होना पड़ता है। उसके लिए घर–परिवार का दवाब हो सकता है। सामाजिक प्रतिष्ठा उसके मन को उद्वेलित कर सकती है। बच्चें के माता–पिता कर्ज लेकर उसे पढ़ाई के लिए भेजते हैं, तो उसके सामने आर्थिक मजबूरी आड़े आ सकती है कि अगर कामयाब नहीं हुए तो फ़िर घर–परिवार वालों पर क्या बीतेगी? इसके अलावा भावनात्मक रूप से भी जब बच्चा घर से पहली बार बाहर निकलता है, तो उसके संवेग उसे प्रभावित करते हैं। इसी बीच अगर बच्चा पढ़ाई में एक बार पीछे छूट गया। तो फिर वह चाहकर भी अग्रिम पंक्ति में नहीं आ सकता और विभिन्न रिपोर्टस के माध्यम से यह बात निकलकर सामने आ रही है कि बच्चों के द्वारा मौत को गले लगाने का एक कारण कोचिंग संस्थानों द्वारा लिए जाने वाले टेस्ट में पिछड़ जाना है।

हाल के दिनों में यह फ़ैसला लिया गया है कि बच्चों को हर हफ़्ते टेस्ट की प्रक्रिया से नहीं गुजरना होगा, लेकिन कहीं न कहीं

ISSN No. 2581-3528

ये इतनी बड़ी समस्या का एकमात्र समाधान नहीं हो सकता है। कोचिंग संस्थानों के बीच से जो एक बात और निकलकर आ रही है। उसके अनुसार विभिन्न कोचिंग संस्थानों में टॉपर्स यानी रैंकर्स पैदा करने की इतनी होड़ होती है कि टेस्ट के माध्यम से कुछ चुनिंदा बच्चों को चुनकर कोचिंग संस्थान उन्हीं पर ज्यादा फोकस करते हैं। ताकि वो संस्थान का नाम रोशन कर सकें। वैसे ये बहुत ही सामान्य सी बात है और अक्सर हम सभी ने स्कूली शिक्षा के दौरान भी इस बात का अनुभव किया है कि होनहार छात्रों पर शिक्षकों का विशेष ध्यान होता है। कहीं न कहीं इस परिपाटी में बदलाव की बेहद जरूरत है, लेकिन बढ़ते बाजारवाद के दौर में इस बात को दरकिनार किया जाना कहीं न कहीं कोढ़ में खाज बढाने का काम किया है।

इस वर्ष अब तक कोटा में जान गंवाने वाले 24 बच्चों की सामाजिक, आर्थिक पृष्ठभूमि को टटोलें, तो यह ज्ञात होता है कि 24 में से 13 आत्महत्या करने वाले बच्चें नाबालिग हैं। वहीं 15 बच्चे गरीब या मध्यमवर्गीय परिवारों से ताल्लुक रखते थे। एक मीडिया रिपोर्ट के अनुसार जान गंवाने वाले बच्चों में से कोई नाई का बेटा है, तो किसी के पिता गाड़ी धोने का काम करते हैं। ऐसे में सहज आंकलन किया जा सकता है कि कैसे पढ़ाई, प्रतिस्पर्धा और प्रदर्शन के दबाव में जान देने वाले छात्रों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। यही नहीं, आँकड़े चीख–चीखकर गवाही देते हैं कि कोई बच्चा पढ़ाई करने तो कोटा शहर पहुँचता है, लेकिन एक हफ्ते के भीतर ही मौत को गले लगा लेता है तो कोई एक महीने भी इस सुसाइड फैक्ट्री में सही से जीवन नहीं गुजार पाता है। सुसाइड फैक्ट्री कहे जाने से कुछ कोचिंग संस्थान को मिर्ची लग सकती है, लेकिन धंधा इस कदर भी नैतिकता पर हावी नहीं होना चाहिए। जिस कारणवश किसी की जान की कोई क़ीमत ही शेष न बचें। वैसे सिर्फ़ दोषारोपण कोचिंग संस्थान पर करके भी अपने सामाजिक उत्तरदायित्व से कोई अलग नहीं हो सकता है। संवैधानिक व्यवस्था में जीवन जीने की स्वतंत्रता अगर मौलिक अधिकार में आती है। तो बच्चों के जीवन जीने का अधिकार न तो कोचिंग संस्थान पढ़ाई के नाम पर छीन सकता है और न ही परिजन अपने सपनों और सामाजिक पद–प्रतिष्ठा के नाम पर!

बच्चों द्वारा की जा रही खुदकुशी की बढ़ती तादाद सामूहिक चेतना को सुन्न कर रही है और छात्रों की खुदकुशी की अकेली वजह–निश्चित सफलता के लिए बेहतर न कर पाने का दुसह्य दबाव तो है ही इसके अलावा कोचिंग संस्थानों में भेड़–बकरी की तरह बच्चों के साथ हो रहा व्यवहार भी। एक टेस्ट है, जो बच्चों की योग्यता और मूल्यों को मापने का एकमात्र पैमाना बनकर रह गया है और इस कसौटी पर बच्चा खरा नहीं उतरता तो उसे इस तरह देखा जाता जैसे उसका जीवन ही व्यर्थ है और उसे इस धरा पर रहने का कोई अधिकार नहीं। निःसंदेह स्थिति इतनी क्रूर और दुर्भाग्यपूर्ण बना दी गई है, जहाँ बच्चों के लिए अपना जीवन जीने के लिए कोई जगह नहीं बची है। एक तरफ बच्चे अपने माँ–बाप की अधूरी– असंतृप्त इच्छाओं के शिकार हो रहे हैं, दूसरी तरफ बच्चों का स्वयं के द्वारा अंधानुकरण भी उन्हें गर्त की दिशा में ढकेल रहा है।

कोटा जिसे एजुकेशन हब कहा जाता है। वहां हो रहे बच्चों की मौत के आंकड़े को देखेंगे तो साधारणतया पाएंगे कि बच्चें मानसिक तनाव, सामाजिक प्रेशर और आर्थिक मजबूरी की वजह से आत्महत्या को गले लगाने को मजबूर हैं। स्वाभाविक सी बात है अगर कोई दूर-दराज का ग़रीब या मध्यम वर्ग का लड़का कोटा जैसे शहर में पढ़ने के लिए जाता है, तो उसे कई स्तर पर समस्याओं से दो-चार होना पड़ता है।

13 बच्चे अगर आत्महत्या करने वाले इस वर्ष नाबालिग की श्रेणी में आते हैं तो कहीं न कहीं भविष्य गढ़ने की चिंता में बच्चे का बचपन तक दांव पर लगाने से माता पिता पीछे नहीं हट रहे हैं और आंकड़े इसी बानगी को बयां करते हैं। बीते दिनों की एक ख़बर है। जब चेन्नई में एक बेटे ने अपनी जीवनलीला खत्म कर ली। तब उनके पिता को समझ आई कि उन्होंने अपने बच्चे में अपनी महत्वाकांक्षा लाद दी थी। जिसकी वजह से उसने मौत का रास्ता चुनना मुनासिब समझा। दरअसल हुआ कुछ यूं था कि सेल्वासेकर नाम का एक व्यक्ति पेशे से फोटोग्राफर था और उसका बेटा प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहा था पर परीक्षा में असफल हो गया और मौत को गले लगा लिया। इस घटना ने पिता को अंदर तक आहत किया, जिसके बाद पिता ने भी बेटे की मौत के गम में आत्महत्या कर ली। इतना ही नहीं उस पिता ने मरने से पहले अपने मित्र से ये बात साझा की थी कि वो अपने बेटे में एक डॉक्टर को देख रहा था, लेकिन काश कि वो अपने बेटे में सिर्फ अपने बेटे को ही देख पाता। उसका मन पढ़ पाता तो आज उनका बेटा ज़िंदा होता। ये कोई पहली और आख़िरी घटना नहीं, लेकिन सवाल जस का तस है कि ये बातें समय रहते हुए क्यों नहीं सूझती? आखिर क्यों स्टेटस टैग और सिंबल के आगे अपनों की मौत की बानगी लिखी जाती है? सब एक जैसे नहीं हो सकते, निर्बाध सत्य यही है। फिर उस अटल सत्य को झुठलाने का प्रयास आख़िर क्यों किया जाता है? इंजीनियरिंग या मेडिकल की पढ़ाई ही शान–शौक़त या प्रतिष्ठा का जरिया नहीं हो सकती। तभी तो किसी ने कहा है कि, 'सितारों से आगे जहाँ और भी हैं।' इसलिए अभिवावकों को समझना होगा कि वो अपने किशोर उम्र के बच्चों के कोमल दिलो–दिमाग पर कितना बोझ डालना और कितना नहीं। इसके अलावा रहनुमाई व्यवस्था को चाहिए कि वो शिक्षा तंत्र को इस काबिल बना सकें, जो मौत बांटने के बजाय बेहतर और कुशल व्यक्तित्व निर्माण का साधन बन सके।

(लेखिका स्वतंत्र लेखिका एवं शोधार्थी हैं)

ISSN No. 2581-3528

आपातकाल के विरुद्ध शंखनाद करने वाले लोकनायक जयप्रकाश नारायण

भारतीय लोकतंत्र के महानायक जयप्रकाश नारायण का जन्म 11 अक्टूबर 1902 को बिहार के सारन जिले के सिताबदियारा गांव में हुआ था। उनका जन्म ऐसे समय में हुआ था जब देश विदेशी सत्ता के आधीन था और स्वतंत्रता के लिए छटपटा रहा था। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा सारन और पटना जिले में हुई थी। वे विद्यार्थी जीवन से ही स्वतंत्रता के प्रेमी थे पटना में बिहार विद्यापीठ में उच्च शिक्षा के लिए प्रवेश लेने के साथ ही वे स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने लगे। वे 1922 में उच्च शिक्षा के लिए अमेरिका चले गये। जहां उन्होंने 1922 से 1929 तक कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय व विसकांसन विवि में अध्ययन किया। वहां पर अपने खर्चे को पूरा व नियंत्रित करने के लिए खेतों व रेस्टोरेंट में काम किया। वे मार्क्स के समाजवाद से प्रभावित हुए। उन्होनें एम ए की डिग्री प्राप्त की। इसी बीच उनकी माता जी का स्वास्थ्य काफी बिगड़ने लगा जिसके कारण वे अपनी पढ़ाई को छोड़कर स्वदेश वापस आ गये। भारत वापस आने पर उनका विवाह प्रसिद्ध गांधीवादी बृजकिशोर प्रसाद की पुत्री प्रभावती के साथ संपन्न हुआ।

जब वे अमेरिका से वापस लौटे तब भारत में स्वतंत्रता आंदोलन चरम सीमा पर था। वे भी भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन का हिस्सा बने। 1932 में गांधी जी सहित अन्य नेताओं के जेल जाने के बाद उन्होंने इस आन्दोलन का नेतृत्व किया। अंततः उन्हें भी 1932 में जेल में डाल दिया गया। नासिक जेल में उनकी मुलाकात मीनू मसानी, अच्युत पटवर्धन, सी के नारायणस्वामी सरीखे कांग्रेसी नेताओं के साथ हुई। जेल में चर्चाओं के बाद कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का जन्म हुआ। यह पार्टी समाजवाद में विश्वास रखती थी।

1939 में उन्होंने अंग्रेज सरकार के खिलाफ लोक आंदोलन का नेतृत्व किया। सबसे बड़ी बात यह है कि जेपी स्वतंत्रता संग्राम के आंदोलन में हथियार उठाने के पक्षधर थे। उन्होंने सरकार को किराया और राजस्व को रोकने का अभियान चलाया। टाटा स्टील कंपनी में हड़ताल करवाकर यह प्रयास किया कि अंग्रेजों को स्टील, इस्पात आदि न पहुंच सके। जिसके कारण उन्हें फिर हिरासत में ले लिया गया। उन्हें नौ माह तक जेल की सजा सुनायी गयी।

आजादी के बाद जयप्रकाश नारायाण ने 19 अप्रैल 1954 को बिहार के गया में विनोबा भावे के सर्वोदय आंदोलन के लिए जीवन समर्पित कर दिया। 1959 में उन्होंने लोकनीति के पक्ष में राजनीति करने की घोषणा की। 1974 में उन्होंने बिहार में किसान आंदोलन का नेतृत्व किया और तत्कालीन बिहार सरकार के इस्तीफे की मांग की। जेपी प्रारम्भ से ही कांग्रेसी शासन विशेषकर इंदिरा गांधी की राजनैतिक शैली के प्रखर विरोधी थे। 1975 में श्रीमती इंदिरा गांधी ने अपनी सत्ता को बचाकर रखने के लिए आपातकाल लगा दिया। आपातकाल के दौरान देश के विपक्षी दलों के नेताओं को जेलों में डाल दिया गया। लगभग 600 से अधिक नेताओं को जेल में डाला गया तथा उन पर जेलों में अमानवीय अत्याचार किया गया जनता पर प्रतिबंध लगाये गये। आपातकाल में अत्याचारों से परेशान जनता कांग्रेस पार्टी से बदला लेने के लिए उतावली हो रही थी।

जनता व नेताओं को अत्याचारों से मुक्ति दिलाने के लिए जेपी ने अथक प्रयासों से विपक्ष को एक किया और 15 जून 1975 को पटना में ऐतिहासिक रैली में जेपी ने सम्पूर्ण क्रांति का आह्वान किया। 1977 के चुनावों में देश को पहली बार कांग्रेस से मुक्ति मिली। लेकिन दुर्भाग्यवश जेपी का यह अथक प्रयास बीच में ही टूट गया और उनके प्रयासों से बनी पहली गैर कांग्रेसी सरकार बीच में ही बिखर गयी। जिससे उनको मानसिक दुःख पहुंचा।

लोकनायक जयप्रकाश नारायाण सम्पूर्ण क्रांति में विश्वास रखते थे। उन्होंने बिहार से ही सम्पूर्ण क्रांति का आरम्भ किया था। वे घर– घर क्रांति का दिया जलाना चाह रहे थे। जेपी का जीवन बहुत ही संयमित व नियंत्रित रहता था। वे राजनैतिक जीवन में उच्च आदर्शों का पालन करते थे जो देश के कई राजनैतिक दलों को पसंद नहीं थे। आज बिहार के अधिकांश नेता लालू प्रसाद यादव, नीतिश कुमार, रामविलास पासवान आदि कभी जेपी आंदोलन के युवा नेता हुआ करते थे। स्वर्गीय इंदिरा गांधी के आपातकाल के खिलाफ सम्पूर्ण क्रांति का आह्वान करने के नायक समाजसेवक लोकनायक जयप्रकाश जी को 1998 में उन्हें मरणोपरांत भारतरत्न से सम्मानित किया गया। लोकनायक जी को 1995 में मैगसेसे पुरस्कार प्रदान किया गया। जब 8 अक्टूबर 1979 को जेपी का निधन हुआ था तब तत्कालीन प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह ने सात दिन का राजकीय शोक घोषित किया था।

- मृत्युंजय दीक्षित

जन्मदिवस विशेष

मिसाइल मैन डा. अब्दुल कलाम

क्या हम कल्पना कर सकते हैं कि उस युवक के मन पर क्या बीती होगी, जो वायुसेना में विमान चालक बनने की न जाने कितनी सुखद आशाएं लेकर देहरादून गया था, पर परिणामों की सूची में उसका नाम नवें क्रमांक पर था, जबकि चयन केवल आठ का ही होना था। कल्पना करने से पूर्व हिसाब किताब में यह भी जोड़ लें कि मछुआरे परिवार के उस युवक ने नौका चलाकर और समाचारपत्र बांटकर जैसे-तैसे अपनी शिक्षा पूरी की थी।

देहरादून आते समय केवल अपनी ही नहीं, अपने माता-पिता और बड़े भाई की आकांक्षाओं का मानसिक बोझ भी उस पर था, जिन्होंने अपनी अनेक आवश्यकताएं ताक पर रखकर उसे पढ़ाया था। परन्तु उसके सपने धूल में मिल गये। निराशा के इन क्षणों में वह जा पहुंचा ऋषिकेश, जहां जगतकल्याणी मां गंगा की पवित्रता, पूज्य स्वामी शिवानन्द के सान्निध्य और श्रीमद्भगवद्गीता के सन्देश ने उसे नये सिरे से कर्मपथ पर अग्रसर किया। उस समय किसे मालूम था कि नियति ने उसके साथ मजाक नहीं किया, अपितु उसके भाग्योदय के द्वार स्वयं अपने हाथों से खोल दिये हैं।

15 अक्तूबर, 1931 को धनुष्कोटि (रामेश्वरम्, तमिलनाडु) में जन्मा अबुल पाकिर जैनुल आबदीन अब्दुल कलाम नामक वह युवक भविष्य में 'मिसाइल मैन' के नाम से प्रख्यात हुआ। उनकी उपलब्धियों को देखकर अनेक विकसित और सम्पन्न देशों ने उन्हें मनचाहे वेतन पर अपने यहां बुलाना चाहा (पर उन्होंने देश में रहकर ही काम करने का व्रत लिया था। चार दशक तक उन्होंने 'रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन' तथा 'भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन' में विभिन्न पदों पर काम किया। यही डा. कलाम 2002 ई. में भारत के 11वें राष्ट्रपति बने और अपनी सादगी के कारण 'जनता के राष्ट्रपति' कहलाये।

डा. कलाम की सबसे बड़ी विशेषता थी कि वे राष्ट्रपति बनने के बाद भी आडम्बरों से दूर रहे। वे जहां भी जाते, वहां छात्रों से अवश्य मिलते थे। वे उन्हें कुछ निरक्षरों को पढ़ाने तथा देशभक्त नागरिक बनने की शपथ दिलाते थे। उनकी आंखों में अपने घर, परिवार, जाति या प्रान्त की नहीं, अपितु सम्पूर्ण देश की उन्नति का सपना पलता था। वे 2020 ई. तक भारत को दुनिया के अग्रणी देशों की सूची में स्थान दिलाना चाहते थे। साहसी डा. कलाम ने युद्धक विमानों से लेकर खतरनाक पनडुब्बी तक में सैनिकों के साथ यात्रा की।

मुसलमान होते हुए भी वे सब धर्मों का आदर करते थे। वे अमृतसर में स्वर्ण मन्दिर गये, तो श्रवण बेलगोला में भगवान बाहुबलि के महामस्तकाभिषेक समारोह में भी शामिल हुए। उनकी आस्था कुरान के साथ गीता पर भी थी तथा वे प्रतिदिन उसका पाठ करते थे। उनके राष्ट्रपति काल में जब भी उनके परिजन दिल्ली आये, तब उनके भोजन, आवास, भ्रमण आदि का व्यय उन्होंने अपनी जेब से किया। उन्होंने राष्ट्रपति भवन में होने वाली 'इफ्तार पार्टी' को बंदकर उस पैसे से भोजन सामग्री अनाथालयों में भिजवाई। उनके नेतृत्व में भारत ने पृथ्वी, अग्नि, आकाश जैसे प्रक्षेपास्त्रों का सफल परीक्षण किया, जिससे सेना की मारक क्षमता बढ़ी। भारत को परमाणु शक्ति सम्पन्न देश बनाने का श्रेय भी डा. कलाम को ही है। शासन ने उन्हें 'भारत रत्न' से सम्मानित किया।

आजीवन अविवाहित रहे डा. कलाम अत्यधिक परिश्रमी और अनुशासन प्रेमी थे। वे कुछ वर्ष रक्षामंत्री के सुरक्षा सलाहकार भी रहे। राष्ट्रपति पद से मुक्त होने के बाद भी वे विश्वविद्यालयों में जाकर छात्रों से बात करते रहते थे। वे चाहते थे कि लोग उन्हें एक अध्यापक के रूप में याद रखें। 27 जुलाई, 2015 को शिलांग में छात्रों के बीच बोलते समय अचानक हुए भीषण हृदयाघात से उनका निधन हुआ। 30 जुलाई को उन्हें पूरे राजकीय सम्मान के साथ रामेश्वर में ही दफनाया गया। उन्नत भारत के स्वप्नद्रष्टा, ऋषि वैज्ञानिक डा. कलाम द्वारा लिखित पुस्तकें युवकों को सदा प्रेरणा देती रहेंगी।

प्रेरणा विमर्श 2023

'स्व'- भारत का आत्मबोध

(15,16 एवं 17 दिसम्बर, 2023)

उद्घाटन

15 दिसम्बर
(शुक्रवार)
अपराह्न 3.00 बजे
से
सायं 5.30 बजे तक

↓

उद्घाटन
एवं
प्रदर्शनी का अनावरण

विमर्श

16 एवं 17 दिसम्बर
(शनिवार/रविवार)
प्रातः 10.00 बजे
से
सायं 5.30 बजे तक

↓

पत्रकार विमर्श/लेखक विमर्श
मीडिया शिक्षक/छात्र विमर्श
डिजिटल माध्यम विमर्श
प्रेरणा चित्रभारती लघु फिल्मोत्सव

समापन

17 दिसम्बर
(रविवार)
अपराह्न 3.30 बजे
से
सायं 5.30 बजे तक

↓

समापन समारोह

आयोजक

प्रचार विभाग, मेरठ प्रांत/प्रेरणा शोध संस्थान न्यास, नोएडा

एवं

जनसंचार एवं मीडिया अध्ययन विभाग गौतमबुद्ध विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा

कार्यक्रम स्थल

सभागार
गौतमबुद्ध विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा

प्रेरणा विमर्श कार्यालय

प्रेरणा भवन, सी-56/20 सेक्टर-62, नोएडा
ई-मेल prernavimarsh2023@gmail.com

संपर्क सूत्र: 9650600195, 9811077950, 9354133754, 0120 4565851

Prerna Media | Prernasmedia | 9891360088 | @PrernaMedia